सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

• वर्ष : 12 • • अंक : 2 • • 5 अक्टूबर 2015 • • मूल्य : 20 रु. •

पू. तपस्वी मुनि श्री समयप्रभसागर जी म.सा. को वासक्षेपण का पारणा कराते मुनि मंडल

पारणा कराता संघवी अंतराली परिवार

संवत्सरी महापर्व पर सभी को क्षमायाचना

एवं

मिच्छामि दुक्कड़ं

जीवन धरातल पर उठते-बैठते, चलते-फिरते,

प्रमादवश-प्रमोदवश, आवेगवश-आवेशवश,

अज्ञानवश-अज्ञानवश हमारे द्वारा कहीं भी-कभी भी

आपके मन दर्पण पर कोई ठेस लगी हो तो

संवत्सरी-महापर्व

पर विनम्र-विनम्र भावसह, वचन, काया के योग से शुद्ध अंतकरण से

क्षमायाचना करते है।

PANNALAL GOUTHAMCHAND KAWAD

SRI SUMANGALI JEWELLERS

CHENNAI-BANGALORE-SALEM-TIRUPATTUR

FROM

GOUTHAMCHAND, PARASCHAND, PUKHRAJ,
DHARAMCHAND, ASHOK, SURENDER, RAJESH,
ANAND, PADAM, LALITH & MANISH KAWAD

भगवान महावीर

जो अहंकारो, भणितं अप्पलक्खणं।
जह मे इट्ठाणिट्ठे सुहासुहे तह सव्वजीवाणं॥

आचारांग चूर्णि १/१/१,६

यह जो अन्दर में 'अहं' = 'मैं' की चेतना है, वह आत्मा का लक्षण है। जैसे इष्ट-अनिष्ट, सुख-दुःख मुझे होते है, वैसे ही सब जीवों को होते है॥

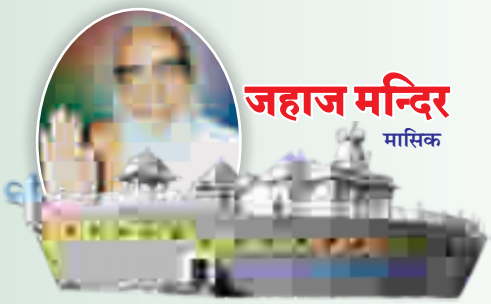

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव गणाधीश उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 12 अंक : 7 5 अक्टूबर 2015 मूल्य 20 रू.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	07
4. दो दीये : एक ज्योति	मुनि श्री मनितप्रभसागजी म.सा.	11
4. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
5. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	14
5. साधना का स्वर्णिम शिलालेख : जिनचन्द्रसूरि	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	17
7. बोथरा गोत्र का इतिहास	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	20
8. श्री जैन-शारदा महालक्ष्मी पूजन		22
8. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	27
9. समाचार दर्शन	संकलन	28-46
12. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-113	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	47
13. जहाज मंदिर पहेली 111 का उत्तर		49
14. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	50

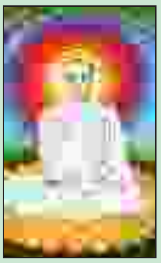

दीपावली की हार्दिक बधाई

परमात्मा महावीर प्रभु के निर्वाण दिवस,
गणधर गौतम स्वामी के केवलज्ञान दिवस पर
अनंत अनंत वंदनायें।
यह दीपोत्सव आप सभी के लिये मंगलमय हो,
ऐसी हार्दिककामना

जहाज मंदिर परिवार

संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	:	15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	:	11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	:	9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	:	7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	:	3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	:	3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	:	1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

जीवन का सबसे बडा शत्रु है आवेश! आवेश के क्षणों में हम अपने वर्तमान की सोच को खो बैठते हैं, साथ ही भविष्य का हित भी!

अच्छा तो यही है कि कैसी भी स्थिति... परिस्थिति हो, मैं आवेश में नहीं आऊँ! उसके लिये मुझे अपने मन को समाधि दशा से भरना होगा। पर अभी वैसी दशा का जागरण नहीं है। थोडा सा भी अपने आग्रह या इच्छा के विपरीत कुछ देखता हूँ तो आवेश में आ ही जाता हूँ। इतना जरूर करो कि आवेश के आने के बाद इसे जितना जल्दी विदा करो, अच्छा है।

आवेश के क्षण जितने अल्प होंगे, उतना ही नुकसान कम होगा। क्योंकि आवेश विरोध का जनक है। मैं विरोध के भावों में डूब जाता हूँ। आवेश विरोध तक सीमित रहे, तब भी ठीक है। पर यदि विरोध टिक गया तो वह विग्रह को जन्म देगा। विग्रह का अर्थ है- संघर्ष!

विरोध की स्थिति आने तक उसके हृदय में पूर्वाग्रह से परिपूर्ण एक मानचित्र तैयार हो जाता है। वह उस मानचित्र को ही यथार्थ मानता है। उसके लिये वह संघर्ष करने पर उतारू जाता है।

विग्रह पर गाडी रूकती नहीं है। वह अगले स्टेशन पर पहुँचती है। विग्रह का परिणाम है- विभाजन! वह गुटबंदी को जन्म देता है। वह पक्ष विपक्ष की भ्रामक धारणा उपस्थित करता है। जीवन बंटता है।

विभाजन वैर का जन्मदाता है। फिर वह वैर जन्म जन्मांतर साथ चलता है।

विरोध, विग्रह, विभाजन और वैर इनका क्रमशः आगमन हमारे जीवन को नष्ट करता है और भविष्य को चौपट! पर इसके मूल में है आवेश! आवेश बहुत पतला धागा है। समझ की हल्की-सी हवा से टूट जाता है। यदि नहीं तोड पाते तो वह क्रमशः विरोध आदि की यात्रा करता हुआ वैर की मजबूत रस्सी में बदल जाता है।

बाद में उसे तोड पाना इतना आसान नहीं होता। मैं उस रस्सी में उलझ जाता हूँ। इसलिये अच्छा हो कि मैं प्रारंभ से ही सावधान रहूं।

सम्यक् समझ का इतना विकास करें कि आवेश आ ही न पाये। आवेश के परिणामों की तस्वीर आंखों के सामने रहे, ताकि मैं उससे बच सकूं।

गुरूदेव
की कहानियाँ

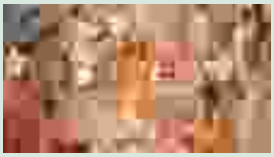

गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.

अपराधी की खोज

एक व्यक्ति किसी के घर पहुँचा। उसने रात्रि निवास के लिए निवेदन किया। उस परिवार ने उसे रात्रि भर ठहरने की अनुमति दी। आगन्तुक एक ब्राह्मण था। रात्रि में उस ब्राह्मण को नींद नहीं आ रही थी। अपरिचित स्थानों पर प्राय: ऐसा हो जाता है। वह करवटें बदल रहा था। इतने में उसने देखा-एक व्यक्ति दीवार फांदकर अन्दर जा रहा था। ब्राह्मण ने देखा-वह अन्दर के कमरे में गया और एक बड़ी-सी पेटी उठाकर बाहर लाया।

ब्राह्मण ने घर के मालिक की तरफ देखा। वे गहरी नींद में थे। उसने सोचा-मेरे सामने चोरी हो रही है। मुझे जिन्होंने आश्रय दिया, उनके घर चोरी! नहीं, मैं ऐसे ही नहीं बैठ सकता। इसको पकड़ लेना चाहिए।

उसने ऐसा सोचा और तुरन्त छलांग लगाकर पीछे से उसकी गर्दन पकड़ ली। चोर घबरा गया। क्योंकि वह उसी गली का कांस्टेबिल था। उसने सोचा-अब यह पहचान लेगा, मेरी नौकरी चली जायेगी और मुझे जेल जाना पड़ेगा। उसने पेटी को छोडा और भागने की सोचने लगा।

ब्राह्मण की पकड़ अत्यन्त मजबूत थी और चोर सारा जोर लगाकर अपने आपको छुड़वाने का प्रयास कर रहा था। इसी गुत्थमगुत्थे में दोनों मकान से बाहर आ गये। चोर का अथाह प्रयास व्यर्थ गया और वह ब्राह्मण की गिरफ्त से छूट न सका। परेशान चोर के दिमाग में एक नई तरकीब आई। उसने ब्राह्मण को जोर से पकड़ लिया। पहले तो वह छूटने की कोशिश में था, अब उसने ब्राह्मण को पकड़ लिया था। बड़ी अजीब स्थिति थी। ब्राह्मण चोर को पकड़े हुए था, चोर ब्राह्मण को।

और चोर ने चिल्लाना शुरू किया-चोर! चोर!! चोर!!! घर वाले सब जाग गये। चोर ने ज्योंही घर वालों को देखा, उसने चीखना शुरू किया-हुजूर! यह चोर आपका सामान लेकर भाग रहा था। मैंने इसको पूछा-तू कौन है? जब इसने कोई जवाब नहीं दिया तो मुझे शक हुआ और मैंने इसे पकड़ लिया। यह देखो-सामने पेटी पड़ी है, इसे लेकर यह भाग रहा था, देखो कहीं आपकी तो नहीं है।

ब्राह्मण चीखता हुआ कह रहा था-चोर मैं नहीं, यह है। यही इस पेटी को लेकर भाग रहा था। मैंने पकड़ा तो इसने मुझ पर ही दोष का टोपला ढोल दिया।

घर के मालिक और आस-पास के लोग आश्चर्य चकित हो गये। वे इस माजरे को समझ नहीं सके।

चोर की युक्ति काम कर गई थी। मकान मालिक संशय में पड़ गया-हम ब्राह्मण से अनजान है, हो सकता है यह चोर हो। जबकि ब्राह्मण का चेहरा उसकी निर्दोषता का बहुत बड़ा प्रमाण था।

आखिर में मकान-मालिक ने दोनों को पुलिस के सुपुर्द कर दिया। दोनों को जज महोदय के समक्ष अदालत में पेश किया गया। श्री बंकिमचद्र चटर्जी जज थे-न्याय-निपुण थे। बुद्धिमानी और समस्या को सुलझाने में उनका कोई सानी नहीं था। दोनों ने अपने-अपने पक्ष को जज साहब के सामने जोरदार ढंग से पेश किया। चटर्जी साहब भी चकरा गये। अद्भूत मुकदमा था। कोई प्रत्यक्ष गवाह नहीं था। अब असली चोर का कैसे पता लगाया जाय? बहुत माथा पच्ची करने पर उनके दिमाग में एक योजना आई।

इस केस का फैसला सुनाने जज महोदय श्री चटर्जी साहब कुर्सी पर बैठ गये थे। दोनों तथाकथित अपराधी भी कठघरे (कस्टडी) में खड़े थे। फैसले को सुनने शहर की जनता उमड़ पड़ी थी।

वे अपना फैसला पढ़ें उसके एक क्षण पूर्व चौकीदार भागता-भागता आया और कहा-जज साहब! कोर्ट के

कर्मचारी ब्रजलाल बाबू का खून हो गया।

जज आश्चर्य चकित हो गये। उन्होंने कहा-लाश का मुआयना करना अत्यन्त आवश्यक है, अत: लाश को यहाँ लाया जाय। कर्मचारी ने कहा-लाश को उठाने के लिए दो आदमी चाहिए। खून शहर से दूर एक खेत में हुआ है, वहाँ कोई आदमी जाने को तैयार नहीं है।

जज साहब ने थोड़ी देर सोचकर कहा-इन दोनों को ले जाओ। ये लाश लेकर आ जायेंगे। साथ में और किसी तीसरे व्यक्ति की जरूरत नहीं है।

कोर्ट का हुक्त मानना जरूरी था।

लाश सफेद वस्त्र से ढकी हुई थी। दोनों ने लाश वाली खाट उठाई और कोर्ट की ओर चले। साथ में कोई नहीं था, चारों ओर सुनसानी का सन्नाटा था।

ब्राह्मण ने उस चोर से कहा-

तुमने मेरा धर्म भ्रष्ट कर दिया। मैंने व्यर्थ ही तुमको पकड़ा, तुम चोरी कर जाते तो मेरा क्या बिगड़ता? एक तो मैं बेइज्जत बना, चोरी का कलंक आया। दूसरे मुझे लाश उठानी पड़ी, मेरा धर्म भ्रष्ट हो गया।

वह चारे बोला-

चख, मजा चख, मुझे पकड़ने का। दाल भात में मूसलचन्द बनने का मजा ले। अब मुझे जेल नहीं भेज दिया तो मेरा नाम नहीं। मैं तो पुलिस का आदमी हूँ। अत: मैं तो अभी छूट जाऊँगा।

रास्ते में दोनों इसी तरह बातें करते रहे।

वे कोर्ट में पहुँचे। कोर्ट खचाखच भरी थी।

श्री बंकिमचन्द चटर्जी को अपनी मनोवैज्ञानिक योजना पर भरोसा था। यह द्वश्य उस योजना का चरम बिन्दु था। दोनों ने ज्योंही लाश वाली खाट नीचे रखी। सफेद चदर दूर हटाकर ब्रजलाल उठ खड़ा हुआ। वह सीधा गवाह के कटघरे में जाकर खड़ा हो गया। लोग भयभीत तथा आश्चर्यचकित हो गए।

वह बोलने लगा-हुजूर! इन दोनों की बातचीत मैंने सुन ली हैं। सच्चा अपराधी कान्स्टेबल है। ब्राह्मण सच्चा है। ऐसा कहते हुए उसने सारा ब्यौरा सुना दिया।

चटर्जी को योजना की सफलता पर अपूर्व प्रसन्नता थी। उन्हें वास्तव में दोनों को एकान्त देना था ताकि वे अपनी बातचीत कर सकें। ब्रजलाल बाबू को लाश की जगह लिटा दिया था ताकि वह सारी बातें सुनकर दूध का दूध और पानी का पानी कर सके।

चटर्जी साहब ने फैसला सुनाया। कान्स्टेबल को दो साल की सख्त सजा, नौकरी की छुट्टी और ब्राह्मण को बाइज्जत बरी कर दिया गया।

सारी जनता फैसले करने के इस ढंग और योजना से प्रसन्नचित हुई लौट रही थी। सभी की जबानों पर आज के न्याय की चर्चा थी।

अकेले का स्वर तो कुछ दूर तक जाता।
समूह का स्वर ही शक्ति बन पाता।
दुनिया में वही स्वर सदा अस्तित्व में आया-
जो संगठन के द्वारा स्वयं ही शक्ति जगाता।।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

प्रीत की रीत

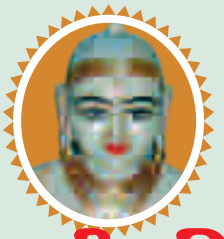

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री सुविधिनाथ स्तवन

द्रव्य क्षेत्र ने काल भाव गुण,
राजनीति ए चार जी।
त्रास विना जड चेतन प्रभुनी,
कोई न लोपे कार जी, शी ० ॥४॥

द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाप आपकी राजनीति के अंग हैं।

यद्यपि आप किसी को न भय दिखाते हैं न किसी को दुखी करते हैं। फिर भी आपकी आज्ञा का कोई उल्लंघन नहीं करते।

प्रस्तुत पद्य में प्रभु का शास्ता गुण निरूपित किया है। वर्तमान में अनुशासन की चर्चा चारों ओर सुनाई देती है। पर अनुशासन इसलिये आचार में नहीं दिखाई देता क्योंकि हम स्वयं शासित नहीं होते। मात्र दूसरों पर अनुशासन थोपने का प्रयत्न करते हैं। जब तक अनुशासन आत्मा के भीतर से नहीं आता तब तक वह जीवन को आंनद से नहीं भर पाता। हृदय परिवर्तन के अभाव में दिये जाने वाले आदेश स्वीकार हो सकते हैं पर वे औपचारिक होंगे, हार्दिक नहीं। हार्दिक अनुशासन उन्हीं का माना जाता है जो स्वयं इन्द्रिया जेता है। एक अच्छे सम्राट् के लिये भी इन्द्रिय नियंता होना कौटिल्य के अनुसार आवश्यक होता है तो एक आध्यात्मिक सम्राट् को कितना आत्म नियंता होना चाहिये? तब कहीं जाकर वह सूक्ष्म और स्थूल प्रणियों के हृदय पर अपने आदेशों और आचार पद्धति का सिंहासन बिछ सकता है। परमात्मा किसी सत्ता अथवा दंड का उपयोग नहीं करते, न किसी प्रकार के विग्रह को जन्म देते हैं फिर भी वे देव, देवेन्द्र और झोंपडी से महलों तक के निवासी उनके नियंत्रण में स्वत: ही अपना कल्याण देख लेते हैं। जिसमें समता और क्षमता हो, वही श्रेष्ठ शास्ता है। प्रभु न किसी को दंड देते हैं, न किसी का त्राण करते हैं। इसी कारण वे श्रेष्ठ शास्ता है। वे किसे दंड दें? क्योंकि सारी सृष्टि उनकी करूणा में समा जाती है और किसे त्राण दें क्योंकि अगर वे नियंता होते तो जीव की स्वतंत्रता को खतरा उत्पन्न हो जाता। तीर्थंकर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव इस चारों ही अंगो के महत्व देते हैं परन्तु जो द्रव्य जैसा है उसे उसी रूप में व्यक्त करते हैं। अपने कर्त्ता भाव का कहीं भी आरोपण नहीं करते। निराकरण और निर्णय की बागडोर अगर कोई संसारी थामता है तो उसकी राजनीति अथवा उसका अनुशासन खतरे में आ सकता है परन्तु जे पदार्थ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से जैसे हैं उन्हें उस रूप में स्वीकृति देने से कहीं किसी प्रकार के विरोध के स्वर उभरने का अवकाश नहीं रहता। समस्त जड़ और चेतन पदार्थ परमात्मा के अनुशासन में रहते हैं। क्योंकि परमात्मा के ज्ञान में और पदार्थे के परिणमन में समानता है। जैसाा स्वभाव पदार्थ प्रभु ने कहा है वैसा ही वास्तव में उनका स्वभाव है। अत: द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव जैसा है वैसा ही उनका प्रतिबिम्ब प्रभु के ज्ञान में छलकता है।

शुद्धाशय प्रभ स्थिर उपयोगे,
जे समरे तुज नामजी।
अव्याबाध अनंतु पामे,
परमामृत सुख धाम जी, शी ० ॥६॥

जो भक्त पवित्र और निर्मल हृदय से प्रभु का भाव पूर्वक स्मरणा करता है वह निश्चित रूप से अनंत, अव्याबाध सुख कोा और परम अमृत धाम को उपलब्ध कर लेता है।

प्रस्तुत पद्य में प्रभु का स्मरण और उससे होने वाले परिणामों का दिग्दर्शन करवाया गया है। स्मरण जीवन को अक्षय सुख की ओर ले जाता है परंतु स्मरण करने की भी एक कला है। जब तक उस कला का हम दर्शन नहीं कर लेते

श्री व्यापारीलालजी

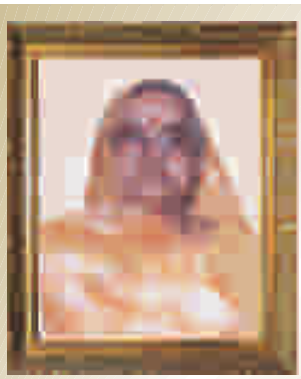

गोदावरीदेवी

अंजुदेवी-रतनलाल,
कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार,
मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार (पुत्र-पुत्रवधु),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
(पौत्र-पौत्रवधु), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक (पौत्र),
भव्या, तनिषा (पौत्री),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
(बहिन)

प्रतिष्ठान

रतनलाल गौतमकुमार
बोहरा ब्रदर्स

403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723

श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा (हालावाला) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : (079) 22869300

तब तक मात्र तोते-रटन्त से मुक्ति का दर्शन स्वप्न बन कर ही रह जाता है।

जब रावण महासती सीता के रूप सौन्दर्य में आकण्ठ डूबा हुआ था और सीता मैया रावण की ओर आँख उठाकर देखने को भी तैयार न थी तब एक वृद्ध ने रावण को समाधान सुझाया कि क्यों न तुम राम बनकर सीता के पास चले जाते हो! राम का तिरस्कार तो सीता सपने में भी नहीं कर सकती। इस प्रकार तुम्हारी मनोकामना भी पूरी हो जायगी और सीता समझ भी नहीं पायेगी कि उसने किसे अपना समर्पण किया है।

रावण ने परेशानी से कहा- यही तो पीडा है कि मैं ज्योंही विद्या के प्रभाव से राम का स्वरूप धारण करता हूँ कि 'काम' गायब हो जाता है। भावों में शुद्धता और पवित्रता आ जाती है।

यहाँ उपरोक्त पद्य में कवि ने भी अपनी स्पष्ट शर्त रख दी है कि नाम स्मरण हो परंतु वह पवित्र हृदय से हो। ऐसा नहीं कि मुँह में राम और बगल में छुरी रखे! अंत: करण की निर्मलता पहले जरूरी है। हृदय में काम, क्रोध, ईर्ष्या, आसक्ति का दावानल आत्म गुणों को भस्मीभूत करने में व्यस्त हो और जुबां मन्दिर में बैठ कर प्रभु गुणों का गान कर रही है तो यह स्तुति निष्फल है। हृदय सृष्टि के कल्याण का आह्वान कर रहा हो, आँखों से पवित्र प्रेम छलक रहा हो तो ही प्रभु का स्मरण सार्थकता देता है। हृदय इतना स्वच्छ और निष्कपट हो कि उसमें उसका ही नहीं समस्त प्राणियों के कल्याण का प्रतिबिम्ब छलके। बिम्ब पवित्र चाहिये तो प्रतिबिम्ब पवित्र ही छलकेगा। सारे जीवन के काँटें जिन्होंने अनादिकाल से चेतना को बींधने का कार्य किया है वे निकल सकते हैं।

ऐसा अमृत मिले जिसे पीने के बाद स्वयं अमरता वरण करे! ऐसा स्थान मिले कि जहाँ से कभी च्युत होने की आशंका ही न रहे।

आणा ईश्वरता निर्भयता,
निर्वाछकता रूप जी ।
भाव स्वाधीन ते अव्यय रूपे,
एम अनंत गुण भूपजी, शी ०॥७॥

परमात्मा की चेतना अनंत गुणों का भंडार है। आज्ञा ईश्वरता, निर्भयता, निष्कामता, स्वतंत्रता और अविनाशी! इन समस्त गुणों के प्रभु समूह हैं।

श्रीमद्जी प्रभु के दरबार में बैठे उन्हीं की गुण गरिमा का गान कर उन्हीं में विसर्जित होने को तत्पर है। भक्त सदैव अभिन्न होकर जीने में ही गरिमा और सार्थकता का अनुभव करता है। एक बीज तभी विशाल वटवृक्ष के रूप में हजारों का शरण बनता है जब धरती के गर्भ में जाकर पहले स्वयं को तपाता है, अस्तित्व को विलीन कर देता है। श्रीमद्जी को संपूर्ण वातावरण में मात्र परमात्मा की झलक और उनकी सौंधी महक ही अनुभव में आ रही है। अमित उल्लास उनके पोर-पोर में छाया हुआ है। उन्हें लगता है कि उनकी वाणी, उनकी प्रज्ञा, उनका जीवन सब कुछ धन्य होने की अन्तिम घडियों में पहुँचा गया है। उनके अंग-अंग में सर्जन का अनोखा लावण्य लिखा है।

महान् से महान् शास्ता जैसे चक्रवर्ती, वासुदेव की आज्ञा भी दंड के भव से मात्र उन क्षेत्रों में मान्य होती है जहाँ उनका शासन है परंतु तीर्थंकर परमात्मा की आज्ञा और निर्देश पालना सहज होती है। और समस्त प्राणी उस आज्ञा पालन में हीन भावनाा की अपेक्षा गौरव और आनंद की अनुभूति करते हैं।

प्रभु का ऐश्वर्य अपार है। अन्तहीन वैभव के स्वामी है प्रभु! स्वयं तो निर्भय है ही परंतु शरणागत को भी निर्भय कर देते हैं। जो स्वयं निर्भय है वही साधना करके सिद्ध बन सकता है।

भय को हम समझे क्योंकि भय समझे बिना निर्भय नहीं हो सकते। निर्भय होना अर्थात् आने वाली समस्त परिस्थितियों को स्वीकार करने की मानसिकता! जो होना है वह होगा ही। फिर आतंकित रहने से क्या लाभ? पर इसका अर्थ यह नहीं कि हमें धर्म अथवा प्रभु की निर्भयता पुरूषार्थ हीन बनाती है। परिस्थिति को बदलने का हमें पुरूषार्थ जरूर करना चाहिये। परंतु मन में तो अभय की ही साधना चलनी चाहिये। आराधना की तल्लीनता भय की आशंका में गहरी नहीं हो सकती।

(क्रमश:)

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

शत शत वंदन...

वंदनकर्त्ता

A मोहनचन्द कानूगा परिवार (अध्यक्ष दादावाडी समिति) तिरूच्चि

फर्म : A मोहनचन्द & Co. फाइनेंस
पुत्तुर हाई रोड़,-तिरूच्चि-18

M गौतमचन्द बुरड़ परिवार (सचिव दादावाडी समिति) तिरूच्चि

फर्म : श्री आदिनाथ ज्वैलर्स
चिन्तामणि-तिरूच्चि

B शौभाबाई कोटड़िया परिवार-तिरूच्चि

फर्म : जुलेशा फाइनेंस एण्ड ज्वेलर्स
हूड़ा स्ट्रीट, पालकौर (तिरूचि)

S जसराज राखेचा परिवार-तिरूच्चि

फर्म : चेतन फाइनेंस एण्ड शोभा ज्वेलर्स
श्री रंगम् - तिरूच्चि

निर्वाण एवं केवलज्ञान पर्व पर विशेष

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

दो दीये: एक ज्योति

दीपावली-रोशनी का पर्व

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अंधकार से प्रकाश की ओर चलो' इसी दिव्य संदेश को लेकर अवतरित होता है दीपोत्सव...निर्वाण का पर्वोत्सव तथा केवलज्ञान का महोत्सव!

दीप मिट्टी के ही नहीं, ज्ञान के जलाने हैं।

रोशनी बाहर में ही नहीं, भीतर में भी करनी है।

बाहर में अंधेरा हो तो भी कोई गम नहीं पर भीतरी अंधकार सताता है।

परमात्मा महावीर का निर्वाण उनके लिये सर्वोत्कृष्ट मंगल बना। भाव दीया बुझा तब देवों ने द्रव्य (मिट्टी) का दीया जलाया।

गुरू के विरह में विलाप करते हुए गौतम गणधर ज्ञान की पूर्णता को प्राप्त हो गये। एक साथ ही दो दीप रोशन हुए। एक साथ दो साधक कृतकृत्य हुए। पाने योग्य सब कुछ पा गये।

यह दीपावली मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम की जीत एवं अयोध्या में वापस लौटने से भी जुडी है।

इसमें भी संदेश है जीवन का शांति और तुष्टि का। हम भी परभाव नामक पराये वन से अपने अध्यात्म के उपवन में आने का पुरूषार्थ करे।

रावण-दहन की प्रक्रिया पाप-बंध का कारण है। पाप-क्रिया की बजाय हम अपने भीतर छिपे-द्वेष के दानव और राग के राक्षस का दहन करे तो आत्म शांति-समाधि के साथ-साथ राष्ट्र-विश्व व्यापी शांति का रास्ता खुल सकता है।

मन बने पावन-पावापुरी

उस काल में... उस समय में जिन लोगों ने परमात्मा की उत्कृष्ट उपलब्धि रूप परिनिवणि को निहारा, वे सौभाग्यशाली थे। हम इन दिनों में पावन-पावापुरी पहुँचे अथवा न पहुँचे पर परमात्मा महावीर और महात्मा गौतम का स्मरण करके शुद्धि, सद्बुद्धि, आत्म ऋद्धि और सिद्धि-समृद्धि को प्राप्त करने का परम गौरव प्राप्त करे।

अमावस्या की रात्रि में जाप करे। संसार के पाप-ताप और संताप को दूर करे।

- प्रथम प्रहर में- 6 से 9 बजे तक- श्री महावीर स्वामी नाथाय नमः
- द्वितीय प्रहर में- 9 से 12 बजे तक- श्री महावीर स्वामी केवलज्ञानाय नमः
- तृतीय प्रहर में- 12 से 3 बजे तक- श्री महावीर स्वामी पारंगताय नमः
- चतुर्थ प्रहर में- 3 से 6 बजे तक- श्री गौतम स्वामी केवलज्ञानाय नमः

यह दीपावली हमारे जीवन का यादगार पृष्ठ बने। आतिशबाजी से बचने का संकल्प स्वयं करे, घर और गली के लोगों को, स्वजनों तथा परिजनों को इस संकल्प के लिये प्रेरित करे। पर्यावरण-प्रदूषण, धन-अपव्यय आदि अनेक अनर्थों की खान रुप आतिशबाजी के कूप में न गिरे। स्वयं के हाथ में है- समाज, संघ और विश्व का भविष्य। अतः इस व्यर्थ के कार्य से सदैव बचे।

ज्योति में ज्योति मिले-दीपावली हर वर्ष आती है। सुन्दर परिधान हर वर्ष धारण करते हैं पर मन मेला ही रहता है। दीप जलते हैं पर अंधेरा कम नहीं होता। मधुर व्यंजन परोसे जाते हैं पर मन और वाणी की कडवाहट कम नहीं होती।

इस वर्ष दीपावली का यह पर्व लौकिक न होकर लोकोत्तर होगा। अलौकिक और अभुतपूर्व होगा। इस वर्ष मेरी दीपावली मेरे आचार, विचार, व्यवहार, भाषा, मन को स्वच्छ, स्वस्थ और सुन्दर बनाने वाली होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

With best compliments from

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

30
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

मार्गभ्रष्ट मुनि की मुश्किलें...

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का विस्तार से मनन-मंथन चल रहा है।

जया अ थेरओ होइ, समइक्कन्त जुव्वणो।
मच्छुव्व गलं गिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ।।6।।

अर्थात् यौवन तो इन्द्रधनुषी रंग और समुद्र में उठती तरंग के समान क्षणिक, अनित्य और नश्वर है क्योंकि हर युवक को बुढा होना ही पडता है, इस कारण युवावस्था की परिपूर्णता होने पर वह उत्प्रव्रजित साधु जब रोगाक्रान्त होकर वृद्धावस्था में प्रवेश करता है, तब उसी प्रकार चिन्तातुर और खिन्न होता है जैसे कांटे को निगलने वाली मछली।

एक क्षुधार्त्त मत्स्य भूख मिटाने के लिये कांटे से युक्त मांस को पाकर अत्यन्त प्रसन्न होता है पर वही कांटा जब उसक गले, पेट आदि को चीर देता है, तब मत्स्य की पीडा का पार नहीं रहता।

जैसे गले की हड्डी का उगलना भी कठिन और निगलना भी कठिन, वैसे ही संयम भ्रष्ट मुनि का संसार में जाने के बाद संसार में जीना कठिन और संसार से निकलना भी कठिन। दूसरी तरफ यदि वह उत्प्रव्रजित साधु पुनः दीक्षा लेना चाहे तो भी नहीं दी जायेगी। गुरूदेव देंगे भी तो कैसे? क्योंकि भोगों में रत उस प्रज्ञाशून्य और आत्मद्रौही पापात्मा को दीक्षा देने में गुरू को कोई सार या भला नहीं दिखता।

- कैसे तो बुढापे में विहार कर पायेगा, जब शरीर ही शक्तिहीन हो जायेगा।
- कैसे तो स्वाध्याय की साधना कर पायेगा, जब रोगाविष्ट शरीर स्थिर नहीं हो पायेगा।
- कैसे तो जिनाज्ञा को जीवन में आत्मसात् कर पायेगा, जब भुक्त भोगों की स्मृति पुनः पुनः विचारों को विकृत करती रहेगी।

एक समय ऐसा आयेगा जब संयमभ्रष्ट साधक न संयम ले पायेगा, न उसे संसार में जीने की इच्छा होगी।

- न मर सकेगा, न जी सकेगा।
- न कह सकेगा, न सह सकेगा।
- न रो सकेगा, न हँस सकेगा।

अन्ततः वह दुर्ध्यान, दुर्व्यवहार और दुर्विचार के कारण असमाधिमरण प्राप्त करके दुर्गति को प्राप्त होगा।

वातावरण मिलेगा। तुम्हारा निर्णय मैं तुम पर ही छोडता हूँ।

मैं दोराहे पर खडा था। एक तरफ पिताजी थे, दूसरी ओर यथार्थ-विचारधारा! अपरिचित मार्ग के निर्णय में भय स्थानों की कमी न थी। पर मुझे मेरी आत्मा, आत्म-बल, पुरूषार्थ और सिद्धान्त पर भरोसा था। मुझे अपना जीवन सफल करना था। समस्याओं की चिंता न थी। क्योंकि साहस की कमी न थी। परिणामत: मैंने संप्रदाय परिवर्तन का निर्णय ले लिया।

पिताजी म. की स्मृति तो मेरे मन मस्तिष्क में है ही। मेरी उनके प्रति श्रद्धा में अथाह वृद्धि हुई। वे एकाकी रहने के लिये तैयार हो गये, पर वे मेरे लिये बाधा नहीं बने। उन्होंने अपने प्रेम व संबंध को मेरी राह की बाधा नहीं बनने दिया।

यह फरमाते हुए पूज्यश्री अपनी आंखों को पोंछने लगे।

39
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

पूज्य गुरुदेवश्री प्रतिक्रमण के बाद हम सभी शिष्यों के साथ विशेष वार्तालाप करते थे। वार्तालाप अनौपचारिक होता था। वह वार्तालाप किसी विशेष विषय पर आधारित नहीं होता था।

रोजाना नित नये विषय! कभी कभी प्रश्नोत्तर!

उस समय का हम सभी इन्तजार करते थे। क्योंकि उस समय पूज्य गुरुदेवश्री के एक नये रूप के दर्शन होते थे। हम महसूस करते थे कि दिन के समय गुरुदेवश्री अलग होते हैं, रात को अलग!

दिन में कठोर अनुशासक की छवि हमारे हृदय में भय भी पैदा करती थी और पढने की प्रेरणा भी! न होता हमारे हृदय में पूज्यश्री का भय, तो पढाई हो ही नहीं पाती।

रात में प्रेम बरसाती पूज्यश्री की मुख मुद्रा! लगता था जैसे हमें मां मिल गई है। उस वार्तालाप में बहुत बार हम अपना सिर गुरुदेव की गोद में रख देते। गुरुदेव का प्यारा सुकोमल हाथ हमारे बालों में सहलाता।

बहुत बार उस समय कहानी सुनते! पूज्यश्री के संस्मरण सुनते! पूज्य गुरुदेव श्री से हम लगातार प्रश्न करते। उनके बचपन... युवावस्था... में झांकने का प्रयास करते।

मुझे आज भी याद है, जब मैंने पूछा था- गुरुदेवश्री! आपश्री तेरापंथ छोड कर मंदिरमार्गी बने... खरतरगच्छ में दीक्षा ली। यह बात तो समझ में आती है कि आपका सैद्धान्तिक/वैचारिक/आगमिक मतभेद था और इस कारण आपने संप्रदाय परिवर्तन किया। पर हमें यह बतायें कि आपने अपने सांसारिक पिता मुनि का त्याग कैसे किया होगा!

पूज्यश्री ने कहा- तेरा प्रश्न उचित है। मैं चाहता था कि पिताजी महाराज भी मेरे साथ ही मंदिरमार्गी हो जाये। इसके लिये मैंने प्रयास भी बहुत किये थे। पर पिताजी म. के लिये संप्रदाय परिवर्तन संभव नहीं लग रहा था। उम्र भी एक कारण थी। फिर जीवन जिस वातावरण में पूरा हुआ, इस ढलती उम्र में नये वातावरण को जीना मुश्किल था। उन्होंने कहा- सत्य क्या है, मैं इस प्रश्न में नहीं पडना चाहता। इस उम्र में मेरी श्रद्धा डांवाडोल हो गई, तो जीवन दूभर होगा। इसलिये तूं अपना निर्णय बहुत सोच समझ कर करना। भविष्य देखना। यहाँ तुम जमे जमाये हो, वहाँ नया अपरिचित

संवत्सरी महापर्व पर सभी को क्षमायाचना

एवं

मिच्छामि दुक्कड़ं

शा. विजयराज महेन्द्रकुमार चंद्रगुप्तराज कुमारपाल
जिनेश अंकित सिद्धार्थ धनाल सौरभ संजय
बेटा पोता पडपोता पन्नालाल विजयराज कटारिया
बिलाडा हाल मैसूर

पू. कल्याणमलजी राजमलजी, धापुबाई चंदनमलजी, पुत्र खूबचंद नेमीचंद बोहरा हाला वाले,
श्रीमती सुरेखाबाई, चमेली खुशीराम, शोभा गुणेन्द्रकुमार, भावना
महेन्द्रकुमार, पूजा राजकुमार जैनम् रिषी, हर्ष विराट्, पुत्री हीरा ज्ञानचंदजी
फर्म - जिनेश्वर गारमेण्ट • जैन गारमेन्ट
शॉप नं.13, कादर पेट, आजाद स्ट्रीट, तिरुपुर तमिलनाडु मरुधर में फालना

श्रीमती शांतिप्रभा रंगरूपमलजी लोढा,
चेन्नई
फोन - 9840270532

SHANTHILAL, KANTHILAL, LALITHKUMAR
MAHAVEERCHAND, BALCHAND, NISHITH LUNIA
OOTY, KOTAGIRI-CHENNAI

T. GYANCHAND, T. MOTHILAL-SHASHI
MOHIT & MOKSHITHA GOLECHA
MOTI & COMPANY
19 MOUNT ROAD, COONOOR- 643102 (T.N.)

अकबर प्रतिबोधक
दादा श्री जिनचन्द्रसूरि को
भावभीनी श्रद्धांजलि

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

साधना का स्वर्णिम शिलालेख: दादा श्री जिनचन्द्रसूरि

अमित प्रतिभा सम्पन्न आचार्यों की दीर्घश्रेणी में दादा जिनचंद्रसूरि का नाम अत्यन्त आदर एवं श्रद्धा के साथ लिया जाता है।

जैन धर्माकाश में दादा जिनचन्द्रसूरि सहस्रांशु के रूप में उभरे और जैसे अंधकारमय जीवन में प्रकाश का पाथेय बन गये।

उनके जीवन की पवित्रता, चिन्तन की मौलिकता और व्यवहार की पारदर्शिता अपने आप में अलौकिक रही तभी तो हजारों-हजारों नयन निमीलित होकर उन्हें अपने आस्था के आसन पर प्रतिष्ठित निहार रहे हैं।

उन्होंने धर्म-प्रगति, संघ-विस्तार, मानवता-संरक्षण और जैन-विज्ञान के क्षेत्र में इतने ज्यादा अवदान दिये कि उन्हें नापने के लिये पाँव छोटे पड जाते हैं। उनके संपूर्ण जीवन के समीक्षण के उपरान्त निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि वे पूर्व जन्म के कर्मयोगी और धर्मयोगी थे।

आचार्य श्री ने युग परिवर्तन का एक क्रान्तिकारी कदम उठाया। बाह्य और आभ्यन्तर, दोनों स्तरों पर संघर्ष की आंच में तपकर आचार्य जिनचंद्रसूरि एक विशुद्ध कुन्दन के रूप में प्रस्तुत हुए।

वे परस्पर विरोधी अनेक आयामों के मानक थे, जैसे वे अपने पूर्वाचार्यों के प्रति अतीव श्रद्धासम्पन्न थे तो नवीनीकरण के आलोक में अंधी परम्पराओं में

जकडे रहना अक्षम्य अपराध समझते थे।

अपने हाथों से तराशे गये अनगढ प्रस्तर को प्रतिमा के रूप में देखकर एक शिल्पी जितनी प्रसन्नता का अनुभव करता है, उससे अधिक गौरवपूर्ण आनंद उनके गुरू जिनमाणिक्यसूरि को अपने बाल मुनि को जिनचन्द्रसूरि के रूप में देखकर था।

तपागच्छीय आचार्य श्री विजयदानसूरि द्वारा गच्छ से बहिष्कृत किये गये मुनि धर्मसागर को दो बार शास्त्रार्थ के लिये आमंत्रित किया पर वे नहीं आये, तब अनेक गच्छ-समुदाय के आचार्यों ने एकस्वर से स्वीकार किया कि

जीवन धरातल पर उठते-बैठते, चलते-फिरते,
प्रमादवश-प्रमोदवश, आवेगवश-आवेशवश,
अनजानवश-अज्ञानवश हमारे द्वारा कहीं भी-कभी भी
आपके मन दर्पण पर कोई ठेस लगी हो तो

संवत्सरी-महापर्व

पर विनम्र-विनय भावमन, वचन, काया के योग से शुद्ध अंतकरण से

क्षमायाचना करते है।

शा. रतनचंदजी उत्तमचंद प्रकाशचंद नेमीचंद विमल सचिन
सुनील जिनेष हितेष अंकित दक्ष समृद्ध आरूष गुड्डु चौपडा परिवार
मु. बिलाडा हाल हैदराबाद

मिच्छामि दुक्कड़ं

जाने-अनजाने में अथवा प्रमादवश हमारे द्वारा
आपके दिल को ठेस लगी हो तो

संवत्सरी महापर्व

के शुभ अवसर पर मन वचन काया पूर्वक
आप सभी से अंतकरण से क्षमायाचना

क्षमाप्रार्थी

श्रीमती रतन रिखबराज, पुत्र-पुत्रवधु : संजय-विनीता, अनिल-शोभा,
पौत्र : रोहिल, निखिल, आदित्य, इशान भंसाली परिवार
जोधपुर निवासी हाल कोलकाता

नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरि शुद्ध खरतरगच्छ की परम्परा में हुए।

चोरों का अंधा हो जाना या मुगल सेना का मार्ग भटक जाना या अमावस को चाँद उगाना, ये सारे चमत्कार उनके साधक-जीवन की सहज परिणति थे।

किसी साधु की सामान्य भूल से नाराज होकर जब जहांगीर ने हर साधु को गृहस्थ बनने का फरमान जारी करवाया, तब उसे रद्द करवाने वाले आचार्य जिनचंद्रसूरि ही थे।

अपने प्रभावक आचरण-प्रवचन के द्वारा कुल छह माह का अमारि प्रवर्तन खंभात, लाहौर, श्रीनगर आदि में करवाने वाले आचार्य जिनचंद्रसूरि थे।

9 वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर जीवन में 95 शिष्यों ने जिनका शिष्यत्व स्वीकार किया, वे आचार्य श्री जिनचंद्रसूरि थे।

अन्तिम समय में जिनकी मुखवस्त्रिका ज्वालाओं के बीच भी अक्षीण-अखण्ड रही, वे आचार्य श्री जिनचंद्रसूरि थे। उनकी कृपा हमारे शासन, संघ और गच्छ पर अस्खलित रूप से बरसती रहे, यही हार्दिक पार्थना करते हैं।

तेरे सुयश के लेख में जिनचंद्र! शब्द मिले नहीं।
हिंसा छुडा करके दिया जिनमार्ग अकबर को सही।
हे संघ रथ के सारथी तुमको प्रणत है ये जहाँ।
काली अमावस को नहाया चाँदनी से नभ यहाँ।।

खरतरगच्छ सम्मेलन हेतु सुझाव आमंत्रित

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा व उनकी आज्ञा से 1 मार्च 2016 से 12 मार्च 2016 तक श्री सिद्धाचल की पावन भूमि पर खरतरगच्छ महासम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन संपन्न होने जा रहा है।

ता. 1 मार्च से 9 मार्च तक साधु साध्वी सम्मेलन होगा। ता. 10 से 12 मार्च तक श्रावक सम्मेलन का आयोजन होगा। पूज्य गुरुदेवश्री ने सकल संघ से सम्मेलन में विचार करने योग्य सुझाव आमंत्रित किये हैं। कोई भी व्यक्ति अपने सुझाव पूज्यश्री को लिखित में भिजवा सकता है। उन सुझावों को सम्मेलन के विचार-बिन्दुओं में सम्मिलित किया जायेगा।

इस महासम्मेलन के आयोजन की सुव्यवस्था हेतु अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन समिति का गठन किया गया है। पूज्य साधु साध्वी भगवंतों को सम्मेलन में पधारने हेतु विनंती की जा रही है। प्रबंधन हेतु विभिन्न समितियों का गठन किया गया है। बडी संख्या में संघों के पधारने की सूचना उपलब्ध हो रही है। एक अनुमान के अनुसार लगभग 25 हजार से अधिक श्रावक श्राविकाओं की उपस्थिति सम्मेलन में होने की संभावना व्यक्त की जा रही है।

सम्मेलन की व्यवस्थाओं के संदर्भ में एक आवश्यक बैठक ता. 19 सितम्बर को पूज्य गुरुदेवश्री की पावन निश्रा में रायपुर में आयोजित की गई। जिसमें व्यवस्थाओं के संबंध में विचार विमर्श किया गया। बैठक में श्री तेजराजजी गुलेच्छा, विजयराजजी डोसी, भंवरलालजी छाजेड, दीपचंदजी बाफना, तिलोकचंदजी बरडिया, सुरेशजी कांकरिया, मोतीलालजी झाबक, प्रकाशचंदजी सुराणा, जयकुमारजी बैद, संतोषचंदजी गोलेच्छा, तिलोकचंदजी पारख, राजेशजी कवाड, रमेशजी लूंकड आदि उपस्थित थे।

प्रेषक : पदमकुमार टाटिया,
प्रचार संयोजक, सम्मेलन समिति

मिच्छामी दुक्कड़म्
योगेश अनिषा आह्वान सिरोया, मुंबई

बोथरा गोत्र का इतिहास

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

इस गोत्र का इतिहास देवलवाडा से प्रारंभ होता है। देवलवाडा पर चौहान वंश के भीमसिंह का राज्य था। इतिहास के अनुसार वह 144 गांवों का अधिपति था। उसकी एकाकी पुत्री जालोर के राजा लाखणसिंह को ब्याही गई थी। वह ससुराल में पारस्परिक द्वन्द्व के कारण अपने पुत्र सागर को लेकर पीहर आ गई थी। भीमसिंह ने अपना राज्य दोहित्र सागर को सौंप दिया।

सागर के चार पुत्र थे- बोहित्थ, माधोदेव, धनदेव और हरीजी! इतिहास की अन्य पुस्तक में तीन पुत्रों का लिखा है।

सागर राजा की मृत्यु के बाद बडे पुत्र बोहित्थ ने देवलवाडा राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली। वह धर्मपरायण राजा था।

विहार करते हुए प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि वि. सं. 1197 में देवलवाडा पधारे। गुरुदेव की दिव्य साधना का वर्णन जब राजा बोहित्थ के कानों से टकराया तो वह उनके दर्शन करने के लिये उत्सुक हो उठा। वह दूसरे ही दिन सपरिवार गुरुदेव के दर्शनार्थ पहुँचा। पहले प्रवचन से ही वह अत्यन्त प्रभावित हो उठा। वह प्रतिदिन प्रवचन श्रवण करने आने लगा। मन में पैदा हो रही जिज्ञासाओं का समाधान करने लगा।

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि ने जिन धर्म का रहस्य समझाते हुए आत्म-कल्याण की प्रेरणा दी। फलस्वरूप उसने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। गुरूदेव बोहित्थरा गोत्र की स्थापना की। गुरुदेव ने कहा- तुम्हारा आयुष्य अल्प है, अतः आत्म-साधना में प्रवृत्त हो जाओ।

बोहित्थ का परिवार विशाल था। उसने चार विवाह किये थे, जिनसे 35 संतानों का जन्म हुआ था। बोहित्थ के सबसे बडे श्रीकर्ण को छोड कर शेष सभी ने जिन धर्म स्वीकार किया था। चित्तौड राज्य पर जब यवनों का आक्रमण हुआ तब चित्तौड के राजा रायसिंह ने राजा बोहित्थ को सहायता हेतु बुलाया। बोहित्थ समझ गये कि गुरुदेव की भविष्यवाणी के अनुसार मेरा आयुष्य पूरा होने जा रहा है। उन्होंने अपना राज्य बडे पुत्र श्रीकर्ण को सौंपा और स्वयं चौविहार उपवास कर युद्ध भूमि में उतर पडे। शत्रु को तो भगा दिया पर स्वयं अपने प्राण न बचा सके। समाधि पूर्वक मृत्यु प्राप्त कर वे बावन वीरों में एक हनुमंत नामक वीर बने। पुनरासर में उनका स्थान बना हुआ है।

श्रीकर्ण के चार पुत्र थे- समधर, उद्धरण, हरिदास एवं वीरदास! श्रीकर्ण ने कई राज्यों पर विजय प्राप्त कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। एक बार शत्रुओं को युद्ध में परास्त कर वापस लौट रहा था कि उसे पता चला कि बादशाह का खजाना उधर से जा रहा है। पिताजी के साथ बादशाह का जो वैर था, उसके कारण वह बदला लेने के लिये क्रुद्ध हो उठा। उसने बीच में ही आक्रमण कर खजाना लूट लिया। इस बात का पता जब बादशाह गौरी को चला तो उसने विशाल सेना लेकर युद्ध किया। उस युद्ध में श्रीकर्ण मृत्यु को प्राप्त हो गया। देवलवाडा का राज्य गौरी के हाथ में चला गया। श्रीकर्ण की पत्नी रत्नादे अपने पुत्रों के साथ पीहर खेडीपुर जाकर रहने लगी।

श्री पद्मावती देवी ने उसे स्वप्न में आदेश दिया कि कल आचार्य भगवंत कलिकाल केवली श्री जिनेश्वरसूरि द्वितीय यहाँ आ रहे हैं। उनके पास जाओ। और अपने श्वसुर का अनुकरण करते हुए उनसे जिनधर्म स्वीकार करो।

दूसरे दिन सुबह अपने चारों पुत्रों के साथ गुरु भगवंत के पास पहुँची। गुरुदेव की देशना सुनकर सभी बोध को प्राप्त हुए। गुरुदेव ने ओसवाल जाति में सभी को सम्मिलित करते हुए जैन धर्म में दीक्षित किया। बोहित्थरा गोत्र का विस्तार किया।

बाद में परिवार की ओर से शत्रुंजय तीर्थ का छह री पालित संघ निकाला। स्वर्ण मोहर और रजत के थालों की प्रभावना करने के परिणाम स्वरूप बहु फलिया कहलाये। बहु फलिया अर्थात् बहुत फले। क्रमशः बहु का बो और बो का फो अपभ्रंश होने से फोफलिया कहलाने लगे।

समधर के पुत्र तेजपाल ने वि. सं. 1377 में दादा जिनकुशलसूरि का पाटण नगर में पाट महोत्सव आयोजित किया था। जिसमें उस समय में तीन लाख रूपये का व्यय हुआ था। उन्होंने पाटण में जिन मंदिर व धर्मशाला का निर्माण करवाया। शत्रुंजय गिरिराज पर कई बिम्बों की प्रतिष्ठा दादा जिनकुशलसूरि द्वारा संपन्न करवाई।

बोथरा गोत्र की उत्पत्ति के विषय में एक और वृत्तांत भी उपलब्ध होता है। उसके अनुसार चौहान राजा सगर के पुत्र बोहित्थ को सांप ने डस लिया था। बहुत उपाय किये पर वह ठीक नहीं हो पाया। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की कृपा से वह स्वस्थ बना। परिणाम स्वरूप वि. सं. 1170 में उसने जैन धर्म स्वीकार किया। उनके वंशज बोहित्थरा कहलाये। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान बीकानेर के ग्रंथागार में उपलब्ध हस्तलिखित गुटका में इग्यारे सतरौ लिखा है। जिसका अर्थ 1170 होता है।

जोधपुर के श्री केशरियानाथ मंदिर स्थित ज्ञान भंडार के एक गुटके में बोथरा गोत्र की उत्पत्ति का संवत् स्पष्ट रूप से 1117 दिया है। लेकिन यह सही प्रतीत नहीं होता। क्योंकि उस समय दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि का जन्म नहीं हुआ था। बोथरा गोत्र के उद्भव का संवत् 1170 या 1197 सही प्रतीत होता है।

कालांतर में बोथरा गोत्र की लगभग 9 शाखाऐं हुई। बच्छाजी से बच्छावत बोथरा, पातुजी से पाताणी या शाह बोथरा, जुणसीजी से जूणावत बोथरा, रतनसीजी से रताणी बोथरा, डूंगरसीजी से डूंगराणी बोथरा, चोपसीजी से चांपाणी बोथरा, दासूजी से दस्साणी बोथरा, मुकनदासजी से मुकीम बोथरा व अजबसीजी से अज्जाणी बोथरा।

राव बीकाजी ने बोथरा-बच्छावतों के सहयोग से ही 15वीं शताब्दी में बीकानेर की नींव रखी थी। व राज्य संचालन के के लिये बच्छराज बोथरा को अपना प्रधानमंत्री बनाया था।

बोथरा गोत्र के इतिहास में कर्मचंद्र बच्छावत का नाम आदर के साथ लिया जाता है। बीकानेर राज्य के मंत्री रहे। बाद में सम्राट् अकबर की सभा में मंत्री पद पर नियुक्त हुए। दादा जिनचन्द्रसूरि के परम भक्त कर्मचन्द्र बच्छावत के पुरूषार्थ से ही सम्राट् अकबर अहिंसा की ओर आकृष्ट हुआ तथा दादा जिनचन्द्रसूरि का भक्त बना।

खरतरगच्छ में बोथरा गोत्र में बहुत दीक्षाऐं संपन्न हुई हैं। खरतरवसहि सवा सोम टूंक के प्रतिष्ठाकारक आचार्य भगवंत श्री जिनराजसूरि बीकानेर निवासी बोथरा गोत्र के रत्न थे जिन्होंने नौ वर्ष की उम्र में दीक्षा गहण की थी। जैसलमेर में तपागच्छीय मुनि श्री सोमविजयजी महाराज के साथ शास्त्रार्थ किया था, उसमें विजयी बन कर खरतरगच्छ की यश पताका फहराई थी। श्री सिद्धाचल की पावन भूमि पर सवा सोमा नी टूंक अर्थात् खरतरवसही टूंक की प्रतिष्ठा वि. 1675 में आपके करकमलों से संपन्न हुई थी, जिसमें लगभग 700 प्रतिमाओं को प्रतिष्ठित किया गया था।

खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनहेमसूरि, जिनललितसूरि, जिनसागरसूरि भी बोथरा गोत्र के महापुरूष थे। अठारहवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध आचार्य श्री जिनलाभसूरि भी बीकानेर के बोथरा गोत्र के रत्न थे। बारह वर्ष की उम्र में दीक्षा ली थी। आत्म प्रबोध जैसे सर्व मान्य ग्रन्थ के रचनाकार आचार्य श्री के करकमलों से ही सूरत के विश्व विख्यात सहस्रफणा पार्श्वनाथ परमात्मा की प्रतिठा हुई थी थी।

वर्तमान में मुनि मोक्षप्रभसागरजी, मुनि समयप्रभसागरजी, मुनि विरक्तप्रभसागरजी, मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी बोथरा गोत्र के हैं, जो संयम की आराधना कर रहे हैं।

श्री जैन शारदा-महालक्ष्मी पूजन दीपावली पूजन-विधि

1. स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर पूजा करें।
2. पूजन के उपकरण-धूप बत्ती, धूपदान, अखण्ड दीपक, पान, मौली, पंचामृत-दही, दूध, घी, मिश्री और केसर मिलाकर कलश तैयार कर लें। अक्षत, सुपारी और केसर आदि सभी एक थाली में संचय करके रख लें।
3. दवात को मांजकर नई स्याही भरें।
4. नई पेन/कलम लें।
5. पूजन करते समय भगवान महावीर स्वामी, श्री गौतम स्वामी, शारदा और लक्ष्मी का चित्र बाजोट पर पूर्व या उत्तर में स्थापित करें।
6. शुभ मुहूर्त्त में नई बहियों, कलम, दवात को किसी चौकी या पाटे पर पूर्व या उत्तर की ओर स्थापित करें।
7. इस पाटे के दाहिने ओर घी का दीपक और बायीं ओर धूप या अगरबत्ती रखें।
8. पूजन करने वालों के दाहिने हाथ की ओर दवात, नई कलम रखे। बहियों को तीन नवकार गिनकर लच्छा बांधे।
9. पूजन करने वालों को तीन नवकार गिनते हुए दाहिने हाथ की कलाई में मौली बांधें। फिर एक नवकार पढ़ते हुए कलम के भी मौली बांधें।
10. दीपावली पर्व पर उपवास, आयंबिल, एकासना आदि तप करें।
11. आतिशबाजी आदि का उपयोग नहीं करें। इससे महान् कर्मबंधन होता है। अतः यह सर्वथा त्याज्य है।
12. कुमारिका द्वारा सर्वपूजकों के कपाल पर कुंकुम का तिलक कर अक्षत लगावें।

नई बही के प्रथम पाने में सर्वप्रथम **ॐ अर्हम् नमः** लिखें। फिर एक से लेकर नौ, 9 आकारों में एक **श्री** से प्रारम्भ कर 9 **श्री** तक लिखें, इससे **श्री** का शिखर बन जाएगा। उसके नीचे रोली (कुंकुम) का 卐 (स्वस्तिक) बनायें, फिर उसके आजू-बाजू में **शुभ लाभ** इस प्रकार लिखें -

।।ॐ अर्हम् नमः।।

श्री

शुभ श्री श्री लाभ

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

卐 卐 卐

फिर बही में लिखना प्रारम्भ करें :-

8	3	4
1	5	9
6	7	2

।।श्री महावीर स्वामिने नमः।।

।।श्री गुरू गौतम स्वामिने नमः।।

।।श्री जिनदत्त-चन्द्र-कुशल-चन्द्र गुरूभ्यो नमः।।

।।श्री सद्गुरूभ्यो नमः।।

।।श्री सरस्वत्यै नमः।।

श्री गुरूगौतमस्वामीजी जैसी लब्धि हो

श्री केसरियाजी जैसा भरपूर भंडार हो

श्री भरत चक्रवर्ती जैसी ऋद्धि हो

श्री बाहुबली जी जैसा बल हो

श्री अभयकुमार जी जैसी बुद्धि हो

श्री कयवन्नाजी सेठ जैसा सौभाग्य हो

श्री धन्ना शालिभद्रजी जैसी सम्पत्ति हो

श्री श्रेयांसकुमारजी जैसी दानवृत्ति हो

श्री जिनशासन की प्रभावना हो।

श्री वीर सं. 2541 श्री विक्रम सं. 20721 मिति कार्तिक वदि 30 बुधावार तारीख 11-11-2015 को श्री महालक्ष्मी देवी का पूजन शुभ मुहूर्त्त में किया।

बाद में स्वस्तिक पर नागरबेल का पान, लौंग, सुपारी, इलायची, रूपा नाणा आदि रखें। फिर अखंड जलधारा बही के चारों ओर देकर पू. गुरूदेव का अभिमंत्रित वासक्षेप, अक्षत, पुष्प, कुसुमांजलि हाथ में लेकर चोपड़ा के ऊपर कुसुमांजलि करें।

श्री शारदा (सरस्वती) पूजन-विधि

निम्नलिखित श्लोक एवं तत्पश्चात् मंत्र बोलें -

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।।

मंत्र- ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्ध भरते मध्यखण्डे भारत देशे ..... नगरे ममगृहे श्री शारदादेवी आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

आह्वान-ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

स्थापना- ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

संनिधान- ॐ श्री शारदा देवी, मम सानिध्यं कुरू कुरू स्वाहा, अत्र पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

यह कहकर हाथ में ली हुई कुसुमांजलि चढ़ावें।

इस प्रकार स्तुति करने के पश्चात् श्री शारदा देवी की पूजन करें :-

पंचामृत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पंचामृतं समर्पयामि स्वाहा।

(पंचामृत का छांटणा करें)

जल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै जलं समर्पयामि स्वाहा। (जल छांटणा करें)

चन्दन पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै हंसगामिन्यै लोकालोक-प्रकाशिकायै श्री सरस्वत्यै चन्दनं गन्धं समर्पयामि स्वाहा । (चन्दन के छांटणा करें)

पुष्प पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। (पुष्प चढ़ायें)

धूप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै धूपं समर्पयामि स्वाहा। (धूप करें)

दीप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै दीपं समर्पयामि स्वाहा। (दीप करें)

अक्षत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अक्षतं समर्पयामि स्वाहा। (अक्षत चढ़ायें)

नैवेद्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। (नैवेद्य चढ़ायें)

फल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै फलं समर्पयामि स्वाहा। (फल चढ़ायें)

अर्घ्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अर्घ्यं सर्वोपचारान् स्वाहा। (बाकी सब वस्तु चढ़ायें)

इस प्रकार द्रव्य पूजन करने के पश्चात् क्षमापना करें, बाद में श्री सरस्वती स्तोत्र का पाठ करें।

श्री सरस्वती स्तोत्र

तर्ज-हे नाथ तेरे चरणों...

हे शारदे मां हे शारदे मां।
हमें तार दे मां हे शारदे मां ।।
है रूप तेरा उज्ज्वल समुज्ज्वल।
सावन-सा रिमझिम गंगा-सा निर्मल।
जीवन का उपवन संवार दे मां,
हे शारदे मां.....।।१।।
अम्बर से विस्तृत चंदा-सी शीतल।
तुमसे प्रकाशित है सारा भूतल।
अमृत की बूंदें दो-चार दे मां,
हे शारदे मां.....।।२।।
मूरख भी पंडित गूंगा भी वक्ता।
तेरी कृपा से क्या हो न सकता।
अपनी कृपा को विस्तार दे मां,
हे शारदे मां.....।।३।।
साधु भी श्रावक भी तुमको ही ध्यावे।
तेरी अमी से निज भान पावे।
मणिप्रभ को वात्सल्य की धार दे मां,
हे शारदे मां.....।।४।।

उपर्युक्त स्तोत्र बोलने के बाद एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारें।

श्री सरस्वती माता की आरती

जय जय आरती माता तुम्हारी।
आलोकित हो बुद्धि हमारी।।1।।
कर में वीणा पुस्तक सोहे।
धवल कमल सिंहासन मोहे।।2।।
तुझ चरणों में आरती अर्पण।
निर्मल बुद्धि देना हर मन।।3।।
मात सरस्वती के गुण गाउँ।
'मणि' चिन्तामणि विद्या पाउँ।।4।।

फिर इस अष्टक का पाठ करें -

श्री गुरु गौतम स्वामी का अष्टक

अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।दोहा।।
त्रिपदी प्राप्त भगवंत से, द्वादश अंग विचार।
रचना क्षण इक में करे, गुरु गौतम जयकार।।1।।
दीक्षा दी जिसको उसे, केवल हुआ श्रीकार।
बोधिदान में कुशल वर, गुरू गौतम जयकार।।2।।
निज लब्धि से ही चढ़े, अष्टापद सुखकार।
बोधे जृंभक देव को, गुरु गौतम जयकार।।3।।
पन्द्रहसौ तापस तपे, दे प्रतिबोध उदार।
एक पात्र से पारणा, गुरु गौतम जयकार।।4।।
वीर प्रभु निर्वाण सुन, मंथन मनन अपार।
पाई केवल संपदा, गुरु गौतम जयकार।।5।।
जो चाहो सुख संपदा, इष्ट सिद्धि संसार।
सुबह शाम नित नित करो, गुरु गौतम जयकार।।6।।
चरणों में मैं नित करूँ, वंदन विधि अनुसार।
इष्ट सिद्धि वांछित फले, गुरु गौतम जयकार।।7।।
गौतम स्वामी को नमो, जाप करो हर बार।
'मणि' मन वंदन भाव से, गुरु गौतम जयकार।।8।।

उपर्युक्त गौतम अष्टक बोलने के बाद पूर्व या उत्तर दिशा सम्मुख होकर धूप-दीप करके एकाग्रचित्त से निम्नलिखित सरस्वती मंत्र की एक माला गिनें।

श्री सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीँ क्लीं श्रीं ह्रीँ ऐं सरस्वत्यै नमः

।।श्री महालक्ष्मी पूजन-विधि।।

श्री महालक्ष्मीजी मूर्ति, सिक्का, सोना, चांदी इत्यादि पूजन के लिए चांदी की थाली में बहुमान से स्थापित की जानी चाहिए।

मन्त्र और विधि

आह्वान- दो हाथ जोड़कर अनामिका अंगुली के मूल-पर्व को अंगूठे से जोड़ने से आह्वान मुद्रा होती है। इस मुद्रा से यह मंत्र बोलकर आह्वान करें-

1. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.... ....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभांडागार-भरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

स्थापना- दोनों हथेलियों को नीचे की ओर उल्टा करने से स्थापन मुद्रा होती है। इस मुद्रा में यह मंत्र बोलें-

2. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.... .....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार-भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र पूजने तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।
3. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.... .....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार-भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अब महालक्ष्मी देवी का पूजन करें :

1. **जल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि ! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु जलं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
2. **गंध पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु, गंधं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
3. **पुष्प पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।
4. **धूप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
5. **दीप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
6. **अक्षत पूजा**- ॐ आँ क्रौ ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
7. **नैवेद्य पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।
8. **फल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु फलानि गृहाण गृहाण स्वाहा।।
9. **वस्त्र पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीं महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा।।

हाथ जोड कर बोलें-

नीर-गन्धाक्षतै पुष्पै-नैवेद्यैर्धूप-दीपकैः।
फलैरर्घ्यं च अर्चामि, सर्वकार्यसुसिद्धये।।

पुष्पांजलि (समर्पित करना)

शान्तिः शान्तिकरः स्वामी, शान्तिधारां प्रवर्षति।
सर्व-लोकस्य शान्त्यर्थं, शान्तिधारां करोम्यहम्।।

जाति-चम्पकमालाद्यै - र्मोगरैः पारिजातकैः।
यजमानस्य सौख्यार्थे, सर्वविघ्नोपशान्तये।।

इस प्रकार द्रव्य पूजा के पश्चात् एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारनी चाहिए।

महालक्ष्मी माता की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, हो देवी जय लक्ष्मी माता।
संकट मेरे हर दो, झोली मेरी भर दो,
पाउँ सुखशाता ।।टेर।।
रखवाली तुम जिन शासन की, संघ सकल ध्यावे।
पहली आरती सिद्धि, दूजी सुख पावे।।1।।
छम-छम पायल घुंघरूँ बाजे, स्वर्ण कमल रचना।
पंखुड़ी शोक निवारे, घर बंधे पलना।।2।।
सूरि मंत्र है मंत्र शिरोमणि, महालक्ष्मी सेवा।
आरती श्रद्धा भावे, पावत शिव मेवा।।3।।
महर करो हे लक्ष्मी माता, आशिष दुःख हरे।
घर आंगन में पधारो, भक्त पुकार करे।।4।।
आरती लक्ष्मी वंदन पूजन, ऋद्धि सिद्धि आवे।
मणिमय संपद् पावे, तन मन हरसावे।।5।।

इसके बाद मंत्र बोले :-

कर्पूरपूरेण मनोहरेण, सुवर्णपात्रान्तर-संस्थितेन।
प्रदीप्तभासा सह संगमेन, नीरांजनं ते जगदम्ब! कुर्वे।
।। ॐ श्रीं ह्रीँ क्लीं श्री महालक्ष्म्यै नमः ।।

तत्पश्चात् अक्षत और फूल लेकर कुबेर का पूजन करके कलश के ऊपर चढ़ावें।

आह्वामि देव! त्वाम् इहा याहि कृपां कुरु।
कोष-वर्द्धये नित्यं, त्वम् परिपक्ष सुरेश्वर।।
धनाध्यक्षाय देवाय, नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय, कुबेराय महात्मने।।

फिर काँटा-बाट हो तो तराजू में स्वस्तिक करके फूल चढ़ावें और काँटें पर नींबू लगावें।

नमस्ते सर्वदेवानां, शांतित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षिभूता जगद्धात्री, निर्मिता विश्वयोनिना।।

पूजन में अज्ञानतावश कोई दोष लगा हो, उसके लिए निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए क्षमायाचना करनी चाहिए।

क्षमायाचना

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।1।।
आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजाऽर्चां नैव जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ।।2।।
अपराधासहस्राणि, क्रियन्ते नित्यशो मया।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।3।।

इन श्लोकों द्वारा क्षमायाचना करें।

इति पूजनविधि

इस प्रकार पूजन करने के बाद अनाथ, अपंग, निराश्रित लोगों को यथाशक्ति द्रव्यादिक का दान करना चाहिए और साधर्मिक भाइयों की यथाशक्ति भक्ति का लाभ लेना चाहिए।

दीपावली के जाप

1. **ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी नाथाय नमः**

   प्रथम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

2. **ॐ ह्रीँ श्री महावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः**

   दूसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

3. **ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी पारंगताय नमः**

   तीसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

4. **ॐ ह्रीँ श्रीं गौतमस्वामी-केवलज्ञानाय नमः**

   अंतिम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

इस मंत्र की 20 माला सूर्योदय से पहले चौथे प्रहर में फेरनी चाहिये। बाद में मंदिर में दर्शन-चैत्यवंदन एवं लड्डू चढ़ाने आदि की विधि करें। तत्पश्चात् गुरुदेव को वन्दन करना चाहिए तथा उनके मुखारविन्द से सप्त स्मरण व श्री गौतमरास को एकाग्रतापूर्वक श्रवण करना चाहिए।

पंचांग

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

NOV. 2015

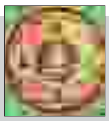
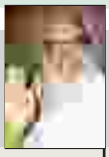
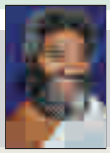

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1 कार्तिक वदि 6	2 कार्तिक वदि 7	3 कार्तिक वदि 8	4 कार्तिक वदि 9	5 कार्तिक वदि 9	6 कार्तिक वदि 10	7 कार्तिक वदि 11
8 कार्तिक वदि 12	9 कार्तिक वदि 13	10 कार्तिक वदि 14	11 कार्तिक वदि 30	12 कार्तिक सुदि 1	13 कार्तिक सुदि 2	14 कार्तिक सुदि 3
15 कार्तिक सुदि 4	16 कार्तिक सुदि 5	17 कार्तिक सुदि 6	18 कार्तिक सुदि 7	19 कार्तिक सुदि 8	20 कार्तिक सुदि 9	21 कार्तिक सुदि 10
22 कार्तिक सुदि 11	23 कार्तिक सुदि 12	24 कार्तिक सुदि 13	25 कार्तिक सुदि 14/15	26 मिगसर वदि 1	27 मिगसर वदि 2	28 मिगसर वदि 3
29 मिगसर वदि 4	30 मिगसर वदि 5					

पर्व दिवस

10.11.15 पाक्षिक प्रतिक्रमण

11.11.15 दीपावली, भग. महावीर निर्वाण कल्याणक,

12.11.15 गौतम स्वामी केवलज्ञान, रास वांचन व नूतन वर्षारंभ

16.11.15 ज्ञान पंचमी

25.11.2015 चौमाशी प्रतिक्रमण, का. पूर्णिमा

28.11.2015 दादा जिनकुशलसूरि जन्म तिथि, सिवाना

अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद बैंगलोर शाखा का गठन

सोमवार को बसवनगुड़ी के जिनकुशल सूरि जैन आराधना भवन में साध्वीश्री सम्यकदर्शनाश्रीजी की निश्रा में अखिल भारतीय श्री जैन श्वेतम्बर खरतरगच्छ युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रतनचन्द बोथरा एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में अ.भा. जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ युवा परिषद बैंगलोर का शुभारम्भ किया गया। इस मौके पर बैंगलोर महानगर के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक युवाओं से पूरा हॉल भरा हुआ था। ट्रस्ट मण्डल के अध्यक्ष महेन्द्र रांका, रतनचंद बोथरा, गजेन्द्र संकलेचा आदि ट्रस्टियों ने गुरूदेव के चित्र का माल्यार्पण किया एवं दीप प्रज्ज्वलित किया। राष्ट्रीय युवा परिषद के उपाध्यक्ष कुशल गुलेच्छा ने सभी का स्वागत किया। राजेन्द्र गुलेच्छा द्वारा मंगलाचरण हुआ। रतनचंद बोथरा द्वारा परिषद के गठन की आवश्यकता एवं उद्देश्य के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। गुरूवर्या ने सभी सदस्यों को गच्छ की सदस्यता दिलवाई व गच्छ की क्रियाओं एवं गुरूदेव के प्रति समर्पित रहने का संकल्प कराया। अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष रतनचंद बोथरा ने बेंगलोर शाखा के अध्यक्ष के रूप में ललित डाकलिया एवं महामंत्री के रूप में ललित रांका की घोषणा की।

समाचार दर्शन

मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. के मासक्षमण की तपस्या सानन्द संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. के महामृत्युंजय तप-मासक्षमण की महान् तपस्या अत्यन्त शाता के साथ संपन्न हुई।

मासक्षमण तप का प्रारंभ श्रावण शुक्ल पंचमी से किया था जो संवत्सरी महापर्व भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को पूर्ण हुआ। इस दौरान प्रतिलेखन, प्रतिक्रमण आदि समस्त क्रियाओं में संपूर्ण रूप से जागरूक रहे।

यह ज्ञातव्य है कि पूज्य मुनिश्री की भागवती दीक्षा संपूर्ण परिवार- दो पुत्र व उनकी माताजी के साथ पालीताना की पावन भूमि पर मिगसर वदि 3 ता. 20 नवम्बर 2013 को संपन्न हुई थी।

पूज्य मुनिश्री नित्य एकासण तप करते हैं। विहार में भी उनकी एकासण, उपवास आदि तपस्या चलती रहती है।

पूज्य मुनिश्री के मासक्षमण तप की अभिनंदना हेतु श्री ऋषभदेव जैन मंदिर सदर बाजार से दादावाडी तक ता. 16 सितम्बर को भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया। रथयात्रा के पश्चात् तपस्वी अभिनंदन करते हुए पूज्य गुरुदेवश्री ने फरमाया- मुनिश्री ने मासक्षमण करके अपने कर्मों की जोरदार निर्जरा की है। तेले की तपस्या के लक्ष्य से उपवास का प्रत्याख्यान किया था। पर तेले के बाद तपस्या के भाव लगातार बढते रहे। एक तरह से यह मासक्षमण तेले से तीस की यात्रा है। मासक्षमण होने पर भी प्रतिदिन प्रवचन श्रवण किया। इतना लम्बा समय बैठे। पूज्यश्री ने स्फटिक रत्न की पार्श्वनाथ परमात्मा की प्रतिमा उन्हें भेंट की। पू. माताजी म. ने अपने हाथ से निर्मित सूत की माला भेंट की। पू. बहिन म. ने स्फटिक रत्न की प्रतिमा भेंट की।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि साधु साध्वी मंडल ने उनकी तपस्या की अनुमोदना की।

इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री ने अपने अनुभव व्यक्त करते हुए कहा-पूज्य गुरुदेवश्री के आशीर्वाद एवं खरतरगच्छ

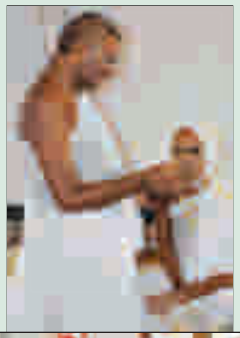

तपस्वी श्री समयप्रभ सागरजी म. को पारणा कराते पूज्यश्री

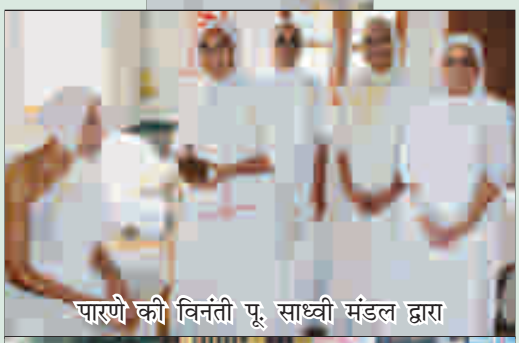

पारणे की विनंती पू. साध्वी मंडल द्वारा

वरघोडे में पूज्य मुनि मंडल एवं श्रावक गण

वरघोडे में पूजनीया साध्वी मंडल

अधिष्ठायिका माता अंबिका देवी की कृपा से ही यह तप शाता पूर्वक संपन्न हुआ है।

भाद्रपद शुक्ल पंचमी को पूज्यश्री का पारणा अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्यश्री के सांसारिक परिवार जन बडी संख्या में बाडमेर, हैदराबाद, लातूर आदि क्षेत्रों से पधारे। पूज्यश्री की माताजी, बडे भाई का परिवार, श्वसुर पक्ष परिवार आदि सभी का पारणे के अवसर पर पधारना हुआ।

वरघोडे में महिलाएँ

साथ ही पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की दीक्षा के समय धर्म माता पिता बने संघवी श्री प्रकाशजी भंसाली विशेष रूप से पधारे। उनके साथ अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रीय चेयरमेन संघवी श्री अशोकजी भंसाली पारणे व वरघोडे के अवसर पर पधारे। रायपुर संघ द्वारा सभी का स्वागत बहुमान किया गया।

रायपुर में पर्युषण आराधना का अपूर्व ठाट

अट्ठाई के तपस्वी मुमुक्षु शुभम् लूंकड

प्रवचन सभा में अपार भीड

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डा. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा में छत्तीसगढ की राजधानी रायपुर नगर में पर्युषण पर्व आराधना अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुई।

तपस्या का रायपुर नगर में पहली बार ऐसा ठाट लगा। लगभग 12 से अधिक मासक्षमण की तपस्या हुई। 45 सिद्धि तप के साथ लगभग 150 से अधिक अट्ठाईयों का ठाट लगा। 600 से अधिक अक्षय निधि व समवशरण तप हुए। 200 लगभग वीस विहरमान की तपस्या से जुडे। श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्टी श्री जयकुमारजी जैन, कुनूर से पधारे श्री मोतीचंदजी गुलेच्छा, चेन्नई से पधारे श्री प्रकाशचंदजी लोढा, श्री किशोरजी कोठारी अमलनेर, श्री सुनीलजी भंसाली दल्लीराजहरा ने चौसठ प्रहरी पौषध के साथ अट्ठाई की। महिलाओं में भी चौसठ प्रहरी पौषध की आराधना बडी संख्या में हुई। श्री भंसालीजी ने 13 उपवास की तपस्या की। संवत्सरी के दिन श्रावक श्राविकाओं में एक हजार से अधिक पौषध हुए। इतनी बडी संख्या में पौषध पहली बार हुए। पूज्य तपस्वी मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. के सांसारिक साढू भाई श्री बाबुलालजी बोहरा एवं सौ. चंद्रादेवी बोहरा ने अट्ठाई की तपस्या की। जोधपुर निवासी मुमुक्षु शुभम् लूंकड ने अट्ठाई की तपस्या की। पूज्य गुरुदेव के प्रभावशाली धाराप्रवाह प्रवचनों को श्रवण करने के लिये जनता उमड पडी। संवत्सरी का प्रतिक्रमण पूज्यश्री ने अपने अनूठे अंदाज में अर्थ की विशिष्ट विवेचना के साथ कराया। बडे बुजुर्गों का कहना रहा कि ऐसा प्रतिक्रमण हमने अपने जीवन में प्रथम बार किया है।

अमावस को चाँद उगायो नाटिका का हुआ मंचन

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ सांचोर के तत्वावधान में पूज्य साध्वीजी श्री हेमरत्नाश्रीजी म.सा. व श्री जयरत्नाश्रीजी म.सा. के सानिध्य एवं श्री नूतनप्रियाश्रीजी म.सा. के निर्देशन में सम्पूर्ण मुंबई में सर्व प्रथम बार ''अमावस को चाँद उगायो'' नाटिका का मंचन रविवार दि. 6 सितम्बर 2015 को मुंबई मराठी साहित्य संघ सभागार में किया गया, खरतरगच्छ के दैदीप्यमान सितारे दादा गुरूदेव श्री जिनदत्तसूरिजी एवं अकबर प्रतिबोधक चतुर्थ दादा गुरूदेव श्री जिनचंदसूरीजी की जीवनी एवं उनके द्वारा किये गए चमत्कारों पर आधारित इस नाटिका में संघ के श्रावक श्राविकाओं एवं बच्चे द्वारा अभिनय कर एक एक दृश्य को जीवंत किया गया, इस नाटिका को देखने के लिए सभागार में मानो जनसैलाब सा उमड़ पड़ा था, लगभग 1200 लोगों ने इस नाटिका का आनंद लिया, कई लोगो ने तो जगह न मिलने पर सीढियों पर बैठकर भी इसे देखा, दादा गुरूदेव के जन्म, दीक्षा, विहार के साथ विभिन्न चमत्कार जैसे अंधे आदमी की आँखों की रोशनी लौटाना, सांप के काटने से मृत शहजादे सलीम के शरीर को विष रहित कर पुन: जीवित करना, काजी द्वारा उलाहना देने पर अमावस के दिन पूनम के चाँद को दिखाना जैसे चमत्कारों वाले ऐतिहासिक दृश्यों को देखकर उपस्थित समूचा जन मानस भाव विभोर हो उठा। कलाकारों के हृदय स्पर्शी अभिनय ने श्रोताओं को अंत तक अपनी कुर्सियों से बांधे रखा। सभी कलाकारों के अभिनय की सराहना हुई, जिसमें चम्पालाल वाघेला, प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल, महेंद्र जैन, लक्ष्य बोथरा, सिल्की बोथरा, मीत संघवी आदि का अभिनय विशेष सराहनीय था, इस कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन करने के लिए श्रीमती प्रेमलताजी लालवानी का संघ द्वारा सम्मान किया गया, सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाभ सांचोर निवासी श्रीमान बोथरा बाबुलालजी धर्माजी कानुंगो परिवार ने लिया, कार्यक्रम के पश्चात संघ ने लाभार्थी परिवार एवं कलाकारों का बहुमान किया, कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी सेवाएं देने के लिए श्री मणिधारी युवा परिषद् मुंबई का आभार व्यक्त किया गया।

– धनपत कानुंगो

36 दिवसीय गुरु इकतीसा का समापन

रायपुर नगर में 36 दिवसीय दादा गुरुदेव इकतीसा का भव्य आयोजन प्रतिवर्ष की भांति किया गया। दादावाडी में प्रतिदिन 8.30 से 10.00 बजे भक्ति संगीत की दिव्य सुरावलियों के साथ सामूहिक इकतीसे का पाठ किया गया। हजारों की संख्या में भक्तों ने गुरुदेव की महिमा की। दादा गुरुदेव की प्रतिमा जिनके समक्ष यह आराधना की गई, उसे घर ले जाने का लाभ श्री गौतमचंदजी कोठारी परिवार ने लिया।

अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् की मुंबई शाखा का हुआ गठन

खरतरगच्छ गणाधीश प.पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की मुंबई शाखा का गठन हुआ शाखा की प्रथम सभा प.पू. गुरूवर्या श्री हेमरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में सोरठिया वाड़ी, तिसरी पांजरापोल में रखी गयी, सभा में लगभग 60 से अधिक सदस्यों ने हिस्सा लिया, सभा को संबोधित करते हुए गुरूवर्याश्री ने परिषद् के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए गच्छ के विकास एवं गच्छ गौरव हेतु युवाओं के एक मजबूत संगठन की आवश्यकता पर जोर दिया, इस सभा में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के महामंत्री श्री प्रदीप श्रीश्रीश्रीश्रीमाल, प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री धनपत कानुंगो एवं सह कोषाध्यक्ष श्री राजेश छाजेड उपस्थित रहे, सर्व सम्मति से श्री चम्पालाल वाघेला को अध्यक्ष, श्री धनपत कानुंगो को वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं श्री शांतिलाल एस. मरडीया को उपाध्यक्ष पद हेतु मनोनीत किया गया। साथ ही आगामी 21 सितम्बर को खरतरगच्छ के चतुर्थ दादा गुरूदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरिजी की पुण्य तिथि निमित्ते भव्य कार्यक्रम की घोषणा भी की गयी। –धनपत कानुंगा

हॉस्पेट में तपस्वियों का भव्य वरघोड़ा निकाला

शहर के शाह गिरधारीलाल शेराजी चेरीटेबल ट्रस्ट तत्वाधान में तथा चातुर्मास विराजित मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. प.पू. स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में भगवान् श्री वासुपूज्य दादा का वरघोड़ा शहर के मैन बाजार में जैन धर्मशाला से प्रारम्भ होकर मुख्य मार्गो से होते हुए। एमजे. नगर में स्थित श्रीपारस पद्मावती आराधना तक निकाला गया। इस दौरान संघ के कार्यकर्ताओं एवं महिलाओं ने जयकारो के साथ जिनशासन तथा तपस्वी अमर रहे के नारे लगाये। आराधना भवन पहुंचने पर गुरूवन्दना हुई तत्पश्चात चातुर्मास के लाभार्थी परिवार के बाबूलाल जी जैन ने बाहर गांव से वह स्थानीय मेहमानो का स्वागत किया तथा प. पूज्य चम्पाश्रीजी म.सा. की 27 वी पुण्य तिथि मनाई गई। तथा रात्रि 8 बजे से मुम्बई से आये भरत जैन द्वारा भक्ति कार्यक्रम भी हुआ। साध्वी प.पू. विरतिप्रभाश्रीजी म.सा., प.पू. विशुद्धप्रभाश्रीजी म.सा. ने संयम लेकर प्रथम चातुर्मास में ही मासक्षमण करने का दृढ संकल्प लिया था, आपश्री का पारणा बुधवार को हुआ। इस कार्यक्रम में जीतो के अध्यक्ष तेजराजजी गुलेच्छा, होसपेट जैन समाज के अध्यक्ष भंवरलालजी नाहर वह कई गणमान्य लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मंच संचालन अशोक मोदी ने किया। – बाबूलाल जी जैन

श्री यू. सी. जैन सा को सादर श्रद्धांजली

कुशल वाटिका बाड़मेर के भूतपूर्व महामंत्री श्री यू. सी. जैन एडवोकेट जोधपुर का अचानक हार्ट अटैक आने से स्वर्गवास हो गया।

उनके स्वर्गवास के समाचार ज्योंहि पू. गणाधीश उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. को प्राप्त हुए सुनकर सहसा उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ।

श्री जैन सा. के स्वर्गवास पर अपनी अभिव्यक्ति देते हुए उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने कहा- जैन सा. हमारी गुरू परम्परा से जुडे हुए बहुत पुराने श्रावक थे। इतने पढ़े लिखे और इतने व्यस्ततम होते हुए भी हम ज्योंहि जोधपुर जिले में प्रवेश करते थे उनकी सेवाएं शुरू हो जाती थी।

उन्हें सबसे गहरी रूचि सुपात्रदान में थी। सुपात्रदान का छोटे से छोटा अवसर भी वे चूकना नहीं चाहते थे। आहारदान के समय शास्त्रोक्त माता-पिता का रूप उनके भीतर जैसे जीवंत हो उठता था। उनके रोम-रोम में वात्सल्य भाव छलक उठता था। अपने गुरू भगवंतों के प्रति उनमें अथाह श्रद्धा थी। धार्मिक शास्त्रों की जानकारी चाहे उन्हें कम थी पर परमात्मा की आज्ञा और उनके वचनों पर उन्होंने कभी कोई प्रश्न नहीं किया। सरलता जैसे उनमें कूट-कूट कर भरी थी। उनका व्यवहार देखकर कभी ऐसा प्रतीत ही नही होता था कि वे इतने बडे एवं नामी वकील होगें। निसंदेह उनके स्वर्गवास से हमने अपना एक परम आत्मीय परम निष्ठावान् श्रावक खो दिया है। उनकी आत्मा जहां भी हो उसे परम शांति मिले एवं परिजनों को इस दुख की घडी में प्रभु वीर की वाणी का आलम्बन मिले। प्रभु वीर की वाणी ही इस दु:ख की घड़ी में उन्हें आश्वस्त करेगी।

पू. बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युतप्रभा श्रीजी म.सा. ने कहा- जैन सा. एक संवेदनशील मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण श्रावक रत्न थे। किसी भी गच्छ संप्रदाय के साधु-साध्वी जी भगवंत क्यों न हो, जैन सा की भक्ति सभी के प्रति एक समान थी। वे कहते थे गुरू एक है परंतु भक्ति तो समस्त चारित्रात्माओं की हमें करनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा-जैन सा. गुरूवर्या प्रवर्तिनी श्री प्रमोद श्री जी म.सा. के भतीजी दामाद होने से हमने बचपन से ही जैन सा. की श्रद्धा एवं भक्ति का खूब अनुभव किया है।

स्वास्थ्य की असुविधा होते हुए भी हमारा चातुर्मास कितनी ही दूर क्यों न वे दर्शन करने के लिये आते ही थे। आते ही सबसे पहले उनके दो कार्य होते थे- निर्दोष सामग्री द्वारा सुपात्रदान एवं संघ पूजन। रायपुर वे पहली बार पधारे थे। आते ही उन्होंने संघ पूजन भी किया और सुपात्रदान भी। फिर कहा- इस बार मैं आपकी निश्रा में ज्यादा समय रहुंगा। अभी अपने रिश्तेदार के घर रात्रि विश्राम करूंगा। और कल प्राप्त: पुन: आऊंगा।

दादावाडी बनाने की उनकी वर्षों की भावना थी। कुशल वाटिका में गुरूवर्या श्री की प्रतिमा भराने का लाभ भी उन्होंने ही प्राप्त किया था। आज उनकी विदायी मन को एक गहरी रिक्तता दे रही है। हम उनका इंतजार कर रहे थे पर मृत्यु ने उन्हें अपने शिकंजे में जकड़ कर विदायी के समाचार दिये है। निसंदेह उनकी भावनाशील प्रभु भक्त आत्मा जहाँ भी पहुंची है वहाँ उसे अवश्य जिनशासन की प्राप्ति होगी। जल्दी ही उनकी आत्मा जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो।

अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् की बैठक संपन्न

रायपुर नगर में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की केन्द्रीय समिति की बैठक परिषद् के चेयरमेन संघवी श्री अशोकजी भंसाली की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय सलाहकार श्री पदमकुमारजी टाटिया ने परिषद् की उपयोगिता, अनिवार्यता आदि विषयों पर प्रकाश डाला।

पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा– युवा परिषद् का केवल गठन करना ही पर्याप्त नहीं है। उसे व्यवस्थित रूप से संचालित करना, उसे गति देना जरूरी है। अन्यथा संस्थाऐं बनती है, प्रारंभ में उत्साह रहता है। बाद में वे केवल कागजों का हिस्सा बन कर रह जाती है। बहुत सारी संस्थाऐं तो कागजों से भी गायब हो जाती है।

यह प्रश्न बहुधा किया जाता है कि जब हर गांव में मंडल या संगठन बना हुआ है। तो नये संगठन की क्या अपेक्षा है। यह चिंतन करना चाहिये कि गांव का संगठन गांव तक सीमित होता है। उसका अन्य गांव के संगठन से कोई संबंध नहीं होता। जबकि इस संस्था का लक्ष्य पूरे भारत के गच्छीय युवाओं को जोडने का है। ताकि एक संबंध स्थापित हो, जागरण हो।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रतनजी बोथरा ने अभी तक हुई गतिविधियों का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने बताया कि पूरे भारत में शाखाऐं स्थापित करने का अभियान चलाया जा रहा है। अभी तक रायपुर, इचलकरंजी, बाडमेर, दिल्ली, अहमदाबाद, बैंगलोर, भिवंडी, महासमुन्द आदि स्थानों पर शाखाओं की स्थापना हो चुकी है।

चेयरमेन संघवी अशोकजी भंसाली ने कहा– आगामी डेढ महिने में हमें 50 शाखाऐं स्थापित करने का लक्ष्य रखना है। इसके लिये सभी को सक्रिय होना है।

बैठक के मुख्य एजेण्डे विधान के प्रारूप पर विस्तार से चर्चा की गई। और केन्द्रीय परिषद् तथा शाखा परिषद् का विधान पारित किया गया।

तय किया गया कि मार्च 2016 में खरतरगच्छ महासम्मेलन के आयोजन में परिषद् को मुख्य भूमिका निभाना है। व्यवस्थाओं में सक्रिय योगदान अर्पण करना है।

पूज्यश्री के पावन सानिध्य में विशाल स्तर पर वाचना शिविर आयोजन करने का निर्णय किया गया। साथ ही प्रतिवर्ष विशाल अधिवेशन पूज्यश्री के सानिध्य में रखने का निश्चय किया गया।

श्री पदमजी चौधरी को केन्द्रीय परिषद् में वैयावच्च मंत्री बनाया गया। केन्द्रीय महामंत्री प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक संपन्न हुई।

प्रेषक : धनपत कानूंगो, प्रचार प्रभारी

हार्दिक शुभकामनाओं सहित -

राहुल ए. संघवी - 9408395557, 8735039456

• तमन्ना प्रेजेन्ट्स

• राहुल इवेण्ट

अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मैजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी

106, सांई कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बड़ोदरा (गुजरात)

जैन पद्मश्री एवॉर्ड अर्पण समारोह

पूज्य गुरुदेव खरतर-गच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में रायपुर नगर में ता. 4 अक्टूबर 2015 को संघवी श्री पुखराजजी छाजेड पादरू-मुंबई निवासी एवं डॉ. श्री सोहनराजजी तातेड, जसोल-जोधपुर निवासी को जैन समाज के सर्वोच्च सम्मान जैन पद्मश्री अलंकरण से अलंकृत किया गया। यह अलंकरण श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर द्वारा अर्पण किया जाता है।

अलंकरण समारोह का संचालन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने किया। उन्होंने संचालन करते हुए जैन पद्मश्री की सटीक आगमिक व्याख्या की।

पूज्यश्री ने कहा- यह मात्र अलंकरण नहीं है, अपितु यह इनके कार्यों व सेवाओं की सराहना है। साथ ही भविष्य में और ज्यादा काम करने का प्रमाण पत्र भी!

दोनों विशिष्ट व्यक्तित्वों का परिचय पचपदरा निवासी भूपतजी चौपडा ने दिया। पूर्व में यह अलंकरण श्री दीपचंदजी गार्डी, श्री कनकराजजी लोढा, डॉ. श्री जितेन्द्र बी. शाह अहमदाबाद एवं श्री मंगलप्रभातजी लोढा को दिया जा चुका है।

पूज्यश्री ने कहा- पुखराजजी भाया की स्मृतियां प्रतिक्षण हमारे मन मानस में तैरती है। वे साधु साध्वियों के माता पिता थे। उनका वात्सल्य और अपनत्व अनूठा था। हमारे हर कार्य के वे सेनापति थे। श्री तातेड जी ने शिक्षा के क्षेत्र में अपूर्व कार्य किया है। वे विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके हैं।

दीक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस अवसर पर श्री सोहनराजजी तातेड एवं श्री राजेश छाजेड ने अपने विचार व्यक्त किये।

सुरत में तपस्या का इतिहास रचा

पू. प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री सुरंजना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्री कुशल कांति खरतरगच्छ संघ द्वारा आयोजित प्रथम बार भव्यातिभव्य प्रभावक चातुर्मास में तपस्याओं का शंखनाद अग्रसर हो रहा है। कुशल कांति खरतरगच्छ संघ की स्थापना पू. गुरुदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की प्रेरणा से उनकी निश्रा में सन् 2011 में हुई थी।

पू. म. सा. के प्रवेश के साथ तप-त्याग का अनुठा अभूतपूर्व प्रवचन, शिविर, स्पर्धा आदि का ठाठ लगा हुआ हैं।

प्रतिदिन पांच आयाम्बिल, लड़ी अठ्ठम, 15 दिन में दो अठ्ठाईया, 36 वाले 4 तपस्वी, 31, 30, 25, 21, 16, 15, 10, 9, उपवास 108 से ज्यादा अठ्ठाईयां एवं 205 सिद्धितप, जैसी 45 दिन की महान उत्कृष्ठ तपस्याओं का अद्‌भुत किर्तीमान स्थापित किया हैं।

8 साल की उम्र के बच्चे, किशोर, युवा वडील अवस्था वाले सभी भाई बहनो ने बडी संख्या में तपस्या में भाग लिया है। तीन साध्वी भगवंत व एक मुमुक्षु बहन के भी सिद्धि तप हुआ। हमारे सूरत शहर के इतिहास में साध्वी जी भगवंत की निश्रा में इतनी विशाल संख्या में तपस्याएं पहली बार हुई हैं। पूरे भारत में पहला इतिहास बना है।

प्रति रविवार को 500 से ज्यादा बच्चे शिविर में भाग लेते है, शनिवार को 700 से ज्यादा लड़किये व महिलाएं भाग लेती हैं। संपूर्ण खरतरगच्छ संघ में इतनी तपस्या प्रथम बार हुई।

सोलापुर में महोत्सव

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गण रत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. श्री प्रीतियशाश्रीजी म. प्रियकल्पनाश्रीजी म. श्री प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म. प्रियश्रुतांजनाश्रीजी म. प्रियमेघांजनाश्रीजी म. प्रियविनयांजनाश्रीजी म. प्रियमंत्राजनाश्रीजी म. आदि की पावन निश्रा में अष्टाह्निा प्रभु भक्ति महोत्सव का आयोजन संपन्न हुआ। उनके प्रभावक चातुर्मास में हुई विविध तपस्या, मासक्षमण आदि विविध तपाराधना के उपलक्ष्य में यह आयोजन किया गया।

महोत्सव का प्रारंभ 27 सितम्बर से हुआ जो 3 अक्टूबर तक चला। इसमें विविध महापूजन पढाये गये।

रायपुर में पंचाह्निका महोत्सव संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में रायपुर नगर में पूज्य तपस्वी मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. के मासक्षमण एवं श्री संघ में मासक्षमण, सिद्धितप, इक्कीस, सोलह, अट्ठाईयां, वीशस्थानक तप आदि विविध तपस्या के उपलक्ष्य में पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया। तपस्वियों का भव्य बहुमान किया गया।

जिसमें श्री मुनिसुव्रतस्वामी महापूजन, श्री दादा गुरुदेव महापूजन, श्री नाकोडा भैरव महापूजन, श्री अंबिका देवी महापूजन एवं पार्श्व पद्‌मावती महापूजन पढाये गये।

विधिकारक श्री अश्विन भाई बैंगलोर से पधारे।

जालना में मासक्षमण व दादावाडी का शताब्दी महोत्सव

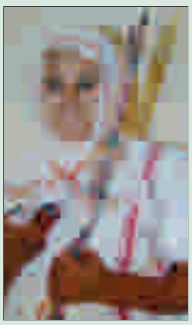

महाराष्ट्र के जालना शहर में इस वर्ष पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणरत्नाश्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. पू. साध्वी डॉ. श्री प्रियलताश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का चातुर्मास शासन प्रभावना के विशिष्ट आयोजनों के साथि चल रहा है।

यह चातुर्मास दादा श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी में हो रहा है। दादावाडी का यह शताब्दी वर्ष है। सौ वर्ष पूर्व इस दादावाडी की स्थापना होकर प्रतिष्ठा हुई थी। दादावाडी का जीर्णोद्धार पू. महाराज साहब की प्रेरणा से प्रारंभ होने जा रहा है।

इस चातुर्मास में पूज्यवर्या की शिष्या पू. साध्वी श्री प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म. ने मासक्षमण की महान् तपस्या की। उनका पारणा ता. 10 अक्टूबर को संपन्न हुआ। तपस्या निमित्त पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया। ता. 9 को वरघोडा निकाला गया। तपस्वियों का अभिनंदन किया गया।

साथ ही दादावाडी के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शताब्दी महोत्सव आयोजित किया गया है। ता. 25 सं 27 अक्टूबर तक सरस्वती माता जाप अनुष्ठान के साथ पद्मावती महापूजन पढाया जायेगा। ता. 28 को सरस्वती महापूजन, 29 को दादा गुरुदेव महापूजन, 30 को सिद्धचक्रमहापूजन, 31 को 108 पार्श्वनाथ महापूजन तथा 1 नवम्बर को दादा गुरुदेव इकतीसा जाप होगा।

राजनांदगांव में अनूठी शासन प्रभावना

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. पू. दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. विभांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में राजनांदगांव में अद्भुत चातुर्मास संपन्न हो रहा है। उनकी प्रभावक वाणी की प्रशंसा चिहुं ओर छाई हुई है।

सभी लोग मुक्त स्वर से प्रशंसा कर रहे हैं, ऐसे प्रवचन हमने आज तक नहीं सुने। उनकी पावन निश्रा में दादा गुरुदेव का महापूजन पढाया गया। विधिकारक श्री अश्विन भाई बैंगलोर से आये थे।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. का प्रवचन स्थानीय जेल प्रशासन की ओर से जेल में आयोजन किया गया। इस प्रवचन को श्रवण कर कैदियों ने विविध नियम ग्रहण किये।

रायपुर में अमावस को चांद उगायो का मंचन

चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की 402वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में रायपुर नगर में अमावस को चांद उगायो नाटक मंचित किया गया। इस नाटक का लेखन गुण्टुर निवासी श्री रमेशजी पोरवाल ने किया है। इस नाटक को सफल बनाने में सौ. अनिता गोलेच्छा, शेखर बैद आदि का पूर्ण योगदान रहा। नाटक को बहुत सराहा गया। लगभग 60 से 70 पात्रों ने इस नाटक में अभिनय किया। इस नाटक में प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि के जन्म से लेकर देवलोकगमन तक के दृश्यों के साथ साथ मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, जिनकुशलसूरि व चौथे दादा गुरुदेव के जीवन से संबंधित दृश्यों का मंचन किया गया।

त्रिची में शासन प्रभावना

पू. छत्तीसगढ रत्न शिरोमणि श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. पू. सुमित्राश्रीजी म. पू. प्रियमित्राश्रीजी म. पू. मधुस्मिताश्रीजी म. ठाणा 4 का चातुर्मास दक्षिण प्रान्त के प्राचीन नगर तिरूच्चिरापल्ली नगर में दादावाडी परिसर में चल रहा है।

पू.श्री के प्रवचनों में अद्‌भुत आकर्षण है। बडी संख्या में श्रोताओं की उपस्थिति हो रही है। विविध तप संपन्न हुए। पूज्याश्री की प्रेरणा से कई अनुष्ठान संपन्न हो रहे हैं।

सिवाना में तपस्या का ठाट

पूजनीया सज्जन मणि श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास अत्यन्त आनंद व ठाटबाट के साथ गढ सिवाना नगर में चल रहा है। प्रवचन व तपस्या की धूम मची हुई है।

पूजनीया साध्वी श्री शीलगुणाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. ने सिद्धि तप की महान् तपस्या की। इस अवसर पर बाहर से बडी संख्या में भक्त गण पधारे। इसके अलावा मासक्षमण आदि विविध तपस्या भी बडी संख्या में हुई। तपस्या निमित्त परमात्म भक्ति महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

चातुर्मास

पू. साध्वी श्री सुप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ठाणा 2

खरतरगच्छ उपासरा, शीतलवाडी, गोपीपुरा, ओसवाल मोहल्ला
सूरत-395002 (गुजरात)

जिन हरि विहार में अविस्मरणीय पर्युषण

शाश्वत तीर्थाधिराज पालीताना स्थित श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में पर्युषण महापर्व की आराधना आनंद मंगल व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

परम पूज्य गुरुदेव गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मननप्रभसागरजी म. एवं पूज्य गुरुदेव मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. की निश्रा में चातुर्मास की आराधना के अंतर्गत नित्य प्रवचन व दोपहर में स्वाध्याय का क्लास चला। जिसमें चातुर्मासिक आराधना करने हेतु पधारे सभी आराधकों ने एवं विभिन्न धर्मशालाओं में रुके श्रावक–श्राविकाओं ने पूरा भाग लिया।

पूजनीया खानदेश शिरोमणि साध्वी दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा चार व साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा तीन और साध्वी समदर्शिताश्रीजी म. के सानिध्य में पर्युषण महापर्व में आराधना की धूम रही।

आराधना की शृंखला में पर्युषण महापर्व की आराधना करने के लिये बाहर गांवों से लगभग छःसौ से अधिक आराधकों का आगमन हुआ। बाड़मेर, चैन्नई, बैंगलोर, अहमदाबाद, जोधपुर, जयपुर, दिल्ली, बदलापुर, नवसारी, पाली, हैदराबाद, लखनउ, सुरत, नागौर, मुंबई, रायपुर, कवर्धा, जगदलपुर, लोहावट, रामजी का गोल, सेलम, दिल्ली सहित भारत वर्ष के विभिन्न आंचलों से आराधकों का आगमन हुआ।

हरि विहार में पर्युषण पर्वाराधना का अनोखा ठाठ रहा। प्रतिदिन प्रातः 9:30 बजे प्रवचन का आयोजन हुआ। पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म. के श्रीमुख से प्रारंभ सुधर्म सभा में मुनि मेहुलप्रभसागरजी म. व मुनि कल्पज्ञसागरजी म. के प्रवचन के पश्चात् संघ पूजन और साधर्मिक वात्सल्य का भी आयोजन रहा। ता. 12.09.2015 को दादा गुरूदेव मणिधारी जिनचन्द्रसूरिजी म.सा. की स्वर्गारोहण तिथि पर गुणानुवाद और दोपहर में मयुर मंदिर में दादागुरूदेव की पूजा पढाई गई।

- कल्पसूत्र वहोराने का लाभ- शा. पारसमलजी ताराचंदजी संकलेचा बाडमेर।
- मुनीमजी बनने का लाभ-मेहता सुमेरमलजी पुखराजजी तातेड़, पादरु
- लक्ष्मी देवी के स्वपनावतरण का लाभ- संघमाता श्रीमती इचरजबाई चंपालाल जी डोसी खजवाणा, बेंगलोर।
- पालनाजी घर ले जाने का लाभ- शा. संपतराजजी गौरवकुमारजी धारीवाल सनावडा-सुरत।
- बारसा सूत्र वहोराने का लाभ- श्री किशोरभाई झवेरी सुरत, मुंबई।

पालीताणा में बारह व्रत धारण करवाये गये

पालीताणा स्थित जिन हरि विहार धर्मशाला में पूज्य गुरुदेव गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी महाराज के शिष्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी महाराज के निर्देशन में देश के विभिन्न आंचलों से आये भाई–बहिनों को बारह व्रत धारण करवाये गये। परमात्मा के समक्ष प्रदक्षिणा से प्रारंभ हुयी विधि में देव–गुरु वंदन कर शासन देवी, गोत्र देवता से मंगल कामना की गयी।

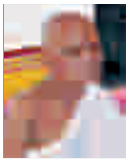

पूज्य गुरुदेव मुनिराज श्री मनोज्ञ–सागरजी महाराज के शिष्य पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी महाराज की प्रेरणा से दि. 01 सितम्बर 2015 को 45 श्रावक–श्राविकाओं ने श्रावक जीवन योग्य बारह व्रत अंगिकार किये। उल्लेखनीय है कि मुनि कल्पज्ञसागरजी महाराज ने श्रावक श्राविकाओं को चातुर्मास में स्वाध्याय के माध्यम से आत्मा, कर्म सिद्धान्त, नौ तत्व आदि की शिक्षा देकर अनुमोदनीय कार्य करते है।

व्रत–धारण के इसी क्रम में दि. 18 सितंबर को भी व्रत–उच्चारण करवाये गये। लगभग 43 जनों ने चतुर्मुख परमात्मा के समक्ष विधि कर अपने आपको धन्य बनाया।

इस अवसर पर ने उपदेश देते हुये मुनि मेहुलप्रभसागरजी महाराज ने कहा कि जीवन परिवर्तन के लिये तीन बात का ध्यान रखें। आत्म निरीक्षण, आत्म विश्वास और उचित अभिगम। इन तीनों को ध्यान में रखते हुये हम अपना जीवन परिवर्तन कर सकते है। संस्कारी व्यक्ति परमात्मा से यह नहीं मांगता कि मेरे कष्ट दूर कर दो! वह यह प्रार्थना करता है कि दुःख में भी मैं संतुलित रह सकूं! परोपकार के कार्य कर सकूं! आपका स्मरण कर सकूं! ऐसी शक्ति और संतुलित मन, हे परमात्मन्! मैं चाहता हूँ।

मुनि कल्पज्ञसागरजी महाराज ने कहा कि भारत भूमि तीर्थंकरों, आचार्यों, महात्माओं की भूमि है। यहाँ संसार का नहीं, साधना का मोल है। हमने साधन को महत्व दिया और साधना को भूला बैठे। साधना अंतरंग आनंद का अनूठा वातावरण निर्मित करती है।

प्रेषक– संघवी विजयराज डोसी, अध्यक्ष, जिन हरि विहार समिति, पालीताणा

ता. 14.9.2015 को 14 स्वप्न अवतरण, परमात्मा महावीर का जन्म वांचन बहुत ही आनंद हर्षोल्लास के साथ सुना। दोपहर में माधवलाल धर्मशाला में जन्म वांचन किया गया। जहां पालना जी का लाभ ज्ञानचंदजी लुणिया, पाली ने लिया। दोनों पालनाजी की रात्रि–भक्ति जिन हरि विहार में रखी गयी।

पर्युषण महापर्व में आराधकों की आराधना के लिये उपकरण सहित एकाशना आदि सुविधाऐं जिन हरि विहार समिति की ओर से निःशुल्क थी। संवत्सरी महापर्व के दिन बारहसौ सूत्र का वांचन मुनि मेहुलप्रभसागरजी म. ने किया। तत्पश्चात् पू. क्षमापर्व की महत्ता समझाई। चैत्यपरिपाटी में तीन मंदिरों की अनुष्ठान पूर्वक आराधना करवाई गई। सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में सभी ने खमत खामणा कर पर्वाधिराज की आराधना विधिवत् रूप से की।

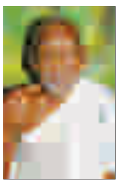

पर्वाधिराज पर्युषण में पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. ने आठ उपवास किये। पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. ने चोविहार तेला किया। पूज्या साध्वी तत्वदर्शनाश्रीजी म. ने छठ–अट्ठम तप कर तप धर्म की आराधना की।

नित्य रात्रि प्रभु–भक्ति का आयोजन संगीतकार संजय भाई ने सभी आराधकों के साथ किया।

नित्य संचालन सहित आराधकों की संपूर्ण सुविधा के लिये संघवी विजयराजजी डोसी का सक्रिय योगदान रहा। अट्ठाई, चार उपवास, तेला आदि के सभी तपस्वियों का बहुमान समिति की ओर से किया गया।

प्रेषक– भागिरथ शर्मा, महावीर छाजेड़

फलोदी में चातुर्मास में आराधना का ठाठ

फलोदी नगर में परम पूज्य गुरुदेव गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के निश्रावर्ती पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. व फलोदी के नंदन प्रवचनकार मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. का फलोदी का चातुर्मास धूम धाम से चल रहा है।

चातुर्मास में विभिन्न प्रकार के आयोजन हुए व चल रहे है। पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. के सांसारिक पिताजी कन्हैयालालजी भंसाली के जीव राशी क्षमापना के उपलक्ष में दो दिवसीय कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ। दि. 25–9–2015 को सुबह त्रिपोलिया बाजार स्थित उनके निवास स्थान पर स्नात्र पुजा, पद्म पुष्प महिला मण्डल द्वारा पढ़ाई गई। रात्री में वैरागी जम्बुस्वामी के जीवन पर आधारित नाटिका का मंचीय कार्यक्रम हुआ। स्थानीय बालक–बालिकाओं की भाव–सभर प्रस्तुति को देखने पुरा गांव जैसे उमड़ पडा था। सभी ने नाटिका की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और साथ ही बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

दि. 26–9–2015 के सुबह 9.30 बजे बेंड़–बाजे के साथ धुम–धाम से पूज्य मुनि भगवतों को कन्हैयालालजी भंसाली के निवास स्थान पर पावन पगलिये करवाये गये। पश्चात् ओसवाल न्याति नोहरे में पूज्य मुनिजी ने कन्हैयालालजी को जीव–राशी क्षमापना व सभी जीवों से क्षमायाचना कराते हुए श्रीसंघ से भी क्षमायाचना करवाई गयी।

इस अवसर पर मुनि मनीषप्रभसागरजी म. ने कहा कि आज से आपको शेष जीवन में भी जप–तप त्याग व समता से व्यतीत करते हुए अपने लक्ष्य के प्रति जागरूक रहते हुए मंजिल को प्राप्त करने पुरूषार्थ करे।

दोपहर में श्रीसंघ का स्वामीवात्सल्य का आयोजन भंसाली परिवार की ओर से किया गया। बाहर से पधारे परिवारजनों ने श्रीमान कन्हैयालालजी भंसाली का बहुमान किया। दोपहर दो बजे आदिनाथजी मंदिर में आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा पढ़ाई गई। रात्री में भक्ति का आयोजन हुआ।

चातुर्मास के दौरान तपस्या में नौ उपवास, तेले, शासन चक्र तप एवं प्रत्येक रविवार को एकासनें, अक्षयनिधि तप आदि तपस्याएं हो रही है। पूज्यश्री की निश्रा में प्रत्येक रविवार को शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बालक–बालिकाओं को प्रभु पुजा, नव तत्त्व, कर्म मीमांसा आदि का ज्ञान देकर संस्कारित किया जा रहा है। पूज्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. द्वारा सशक्त उदाहरणों के माध्यम से जीवन जीने की कला के

चैन्नई में महत्तरा श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 27वीं पुण्य तिथि मनाई गई

चैन्नई सुप्रसिद्ध धर्मनाथ मंदिर में पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. सा. की 27वीं पुण्यतिथि मनाई गयी। पू. धवलयशस्वी आर्या श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की परम पावन निश्रा में पंच दिवसीय परमात्म भक्ति महोत्सव आयोजित हुआ। महोत्सव में प्रथम दिवस दि. 9 सितंबर को परमात्मा की पंचकल्याणक पूजा पढाई गई।

दूसरे दिन 'नवकार करे भव पार' का संगीतमय भाष्य जाप एवं नवकार यन्त्र की पूजा बडे ही आन्नद के साथ सम्पन्न हुई। तृतीय दिवस– प्रातः 9 बजे जोडे सहित श्री पार्श्व पद्मावती पूजन पढाया गया। चतुर्थ दिवस 22.09.2015 को प.पू. महत्तरा पद विभुषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 27 वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष में श्रावक रत्न मोहनजी मनोजजी द्वारा 'जिनशासन महान्' कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। तत्पश्चात् गुणानुवाद सभा हुई।

धवल यशस्वी गुरुवर्या श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. ने अपने उद्बोधन में अपनी गुरूवर्या श्री के साथ घटित विविध घटनाओं पर प्रकाश डालकर उनकी सरलता, नम्रता, व जिनशासन के प्रति समर्पण के भावों को बताया। जिसे सुनकर उपस्थित सभी श्रद्धालु भावविभोर हुये।

साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी ने कहा कि स्वर्ण, आग की वेदना सहन कर शुद्ध बनता हैं, हीरा पिसाई का कष्ट सहन करता है तब चमक प्राप्त करता है, पत्थर हथोडे की मार सहन कर प्रतिमा बनता है, उसी प्रकार जीवन को सार्थक बनाने के लिए सहनशीलता की आवश्यकता है ऐसे विरल व्यक्तित्व की धनी थी पूज्य गुरूवर्या श्री।

साध्वी जिनज्योतिश्रीजी म. ने कहाँ कि जो पुण्यशाली होते है वही ऐसी महान् आत्माओं के सान्निध्य को प्राप्त कर सकते हैं। 105 वर्ष की उम्र व 84 वर्ष का संयम पर्याय। धन्य था आपका जीवन... धन्य आपकी शासन सेवा।

भूरचन्दजी जीरावला, सिवाणा ने अपने उद्बोधन में गुरूवर्याश्रीजी के संयम जीवन की अनुमोदन की। ऐसे दीर्घवय में अप्रमत्त रहकर जो साधना की है उनके जितने गुण गाए कम है। लक्षिता जैन एवं अनिता सोलंकी ने भी गुरू गुणानुवाद गीतिका प्रस्तुत की।

पुण्यतिथि निमित सामुहिक आयंबिल करवाए गए। रात्रि में संगीतकार विपिन पोरवाल द्वारा विशेष भक्ति का आयोजन रखा गया। पंचम दिवस– दादागुरूदेव की महापूजा व सभी तपस्वीयों का बहुमान एवं 27 वीं पुण्यतिथि निमिते 27 प्रश्न–उत्तर 'च' पर आधारित रखे गये। संघमंत्री धर्मचन्दजी गोलेच्छा ने बाहर से पधारे अतिथियों का स्वागत किया।

– गौतम संकलेचा

आदर्श प्रस्तुत किये जाते है जिनकी अनुपालना से बालकों का जीवन, ज्ञान की खुश्बू से सुगंधित हो रहा है।

चातुर्मासिक आराधना–साधना के दौरान जैन दर्शन पर आधारित प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। जिसमें परिक्षार्थियों का उत्साह आश्चर्यजनक रहा। परिक्षा के परिणाम के लिए 2 वर्ग बनाये गये। प्रथम पाँच स्थान प्राप्त करने वालों को विशेष तथा शेष सभी परिक्षार्थियों को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वर्षों के बाद गांव में भव्य चातुर्मास से श्रावक–श्राविका वर्ग सहित अन्य धर्मावलंबियों में भी उत्साह का वातावरण बना हुआ है।

उदयपुर में शासन प्रभावना

पूजनीया गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. पू. दीपमालाश्रीजी म. की पावन निश्रा में चातुर्मास में अपूर्व धर्म आराधना हो रही है। उनका चातुर्मास सूरजपोल स्थित वासुपूज्य मंदिर जिनदत्तसूरि दादावाडी में हो रहा है। उनके प्रवचनों का आम लोग लाभ ले रहे हैं। उनके सानिध्य में कई कार्यक्रम हुए। पिछले दिनों चेन्नई से पधारे मोहनजी मनोजजी गुलेच्छा द्वारा साधु वंदना का अनूठा कार्यक्रम आयोजित किया गया। पिछले दिनों भक्तामर महापूजन, अष्टप्रकारी पूजा, गौतम लब्धि महापूजन आदि का भव्य आयोजन किया गया।

गांधीधाम में पर्वाधिराज सानंद सम्पन्न

कच्छ की औद्योगिक नगरी गांधीधाम की पावन धरा पर प.पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या प.पू. विदुषीवर्या कल्पलता म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास आराधना हेतु पदार्पण हुआ। यहां धार्मिक आध्यात्मिक प्रवचनों के साथ कई धार्मिक अनुष्ठानों की रमझट, शिविर प्रश्नमंच विविध तपश्चर्यायें, प्रश्नोत्तरी आदि के अनूठे कार्य हो रहे है।

प.पू. कल्पलता श्रीजी म.सा. की सुशिष्या नूतन साध्वी भव्यप्रिया श्रीजी म.सा. ने मासक्षमण की उग्र तपश्चर्या चातुर्मास के प्रथम दिवस से प्रारम्भ की। और बहुत शातापूर्वक चलते फिरते अपनी आराधनायें करते हुए 29.8.2015 को मासक्षमण सम्पन्न हुआ। संघ द्वारा परमात्म भक्ति की आराधना द्वारा शाश्वत सुख की प्राप्ति कराने वाला परम अनुमोदनीय कल्याणकारी त्रिदिवसीय महोत्सव सरस्वती महापूजन, भक्तामर महापूजन पार्श्व भैरव महापूजन का आयोजन किया गया। पूजन के लिये अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सुप्रसिद्ध विधिकारक शासनरत्न मनोजकुमार बाबूमलजी हरण पधार थे। सभी श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। पर्युषण आराधना खूब ही धूमधाम से आराधनामय वातावरण में पूर्ण हुई। प्रात: शहनाई वादन से नूतन चिंतामणी जिनालय चौक गुंजारव होता। प्रवचन कल्पसूत्र वांचन तो इतना सूक्ष्म रूप से समझाया जैसे कि कोई फिल्म ही चल रही हो श्रोता लोग मंत्रमुग्ध होकर सुनते थे। जन्म वांचन का माहोल तो देखते बन रहा था। वातावरण हर्ष हिलोरे मार रहा था। बोलियों में तो होड़ लगी थी। बाल बच्चे-नवयुक्त प्रोढ़ बृद्ध जन सभी की खुशी का पार ही नहीं था। प्रवचन, बोलियों, क्षमापना का तो इस वर्ष अद्वितीय समा रहा। कई बिखरे हुए दिलों को जोड़ा। महाराज श्री की निश्रा में अभी भी कई धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है।

शंकर घीया युवक रत्न से सम्मानित

अखिल भारतीय श्री जैन मूर्तिपूजक युवक महासंघ का 15 वा अधिवेशन बोरीवली के गितांजली संघ के प्रांगण में प. पूज्य युवक महासंघ प्रणेता गणीवर्य श्री नयपद्मसागरजी म.सा. को निश्रा में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष सुनीलजी सिंघी महामंत्री हरेश शाह ने अपने विचार रखे। मुकेश वर्धन ने सभी का स्वागत किया। देश भर की 10 राज्यो से 1000 युवक पधारे। इस दो दिन के अधिवेशन में देश भर से युवाओं द्वारा की गई शाशन की सेवाओ का सभी ने अवलोकन किया। गुरूदेव ने जैन समाज के हरेक स्तर पे उत्थान के लिए आगे की रूप रेखा आगे का रोड मैप दिया ताकि बड़े स्तर पर जैन समाज की सेवा कर सके।

इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री प्रवीणजी तोगड़िया व विधायक श्री मंगल प्रभात जी लोढा व समाज सेवी अतुलजी शाह व जीवदया प्रेमी गिरीश जी शाह ने व संस्थापक अध्यक्ष ललितजी नाहटा आदि ने युवक महासंघ को संबोधित किया। इस अधिवेशन का प्रयोजन मुम्बई युवक महासंघ ने किया जिसमें विशेषकर जीवदया व उदारता से भरपूर मुकेश वर्धन- नरेंद्र वाणीगोता, नरेंद्र भंडारी- हीरालाल जैन, जिग्नेश दोषी- मंगल सेठ, महेश कोठारी- धवल जैन और शंकर घीया ने सराहनीय कार्य व गितांजलि संघ के सहयोग से सफल हो पाया। इस अवसर पर मुम्बई की टीम को महाराजा कुमार पाल अवार्ड से समानित किया गया। अध्यक्ष सुनील जी सिंघी व उपाध्यक्ष मुकेशजी वर्धन व महामंत्री हरेश शाह व पूरी टीम ने इस साल का ''युवक रत्न अवार्ड श्री शंकर घीया'' बोरीवली को देकर उनकी जिन शाशन के प्रति सेवाओ व वैयावच्च कार्यो के लिए सम्मानित किया गया।

बन्नरगट्टा-बैंगलोर में आराधना

2.10.2015 वर्षावास तो था तिरूपातुर लेकिन प्रियश्रेष्ठांजनाश्री के एक्सीडेंट के कारण चातुर्मास बैंगलोर ही करने के लिए डॉ. का कहना था। सिर्फ 2 ही दीन में चातुर्मास का निर्णय किया 27 जुलाई को वर्षावास प्रवेश हुआ बन्नरघट्टा के क्लासिक ओर्चड्स में सिर्फ 14 घरवालों ने पूरा चातुर्मास संभालने का निर्णय किया। सुबह ठीक 8.55 को पहले भक्ताम्बर का पाठ, बाद में गुरू इतिहास अंत में व्याख्यान ठीक 9.55 समाप्त सिर्फ 14 घरों में से कम से कम 50 लोगों की उपस्थिति होती थी, शनिवार को दोपहर में 1 घंटे का महिलाओं का शिविर, और हर रविवार को दोपहर में बच्चों का शिविर, और हर रविवार को एक स्पेशल टॉपिक पर व्याख्यान होता था, युवाओं के लिए रविवार को 45 मिनिट की क्लास होती थी, 16 अगस्त रविवार को "INDEPENDENCE DAY" स्पेशल फेन्सी ड्रेस प्रतियोगिता छोटे बच्चों के लिए रखी गई, हमें अपेक्षा नहीं थी लगभग 30 बच्चों ने भाग लिया, 23 अगस्त को बडे बच्चों के लिए रखा 14 सपनों में या अष्टमंगल में कोई भी एक ड्रा करना बिना देखे और उसे कलर या डेकोरेट करना और उसके बीच में पूरा नवकार लिखना बिना देखे, इतने अलग-अलग बनाए, किसी ने रत्न-राशी, सूर्य, चन्द्रमा, दर्पण बनाए, अब पर्वो का राजा पयुर्षण महापर्व का आगमन होने वाला था, तो रखी पालनाजी बनाने की प्रतियोगिता सब के लिए। किसी ने मोतियों की माला से बनाया, तो किसी ने क्ले (CLAY) से बनाया, तो किसी ने स्प्रे (spray painting) से बनाया, इतने अलग-अलग और सुन्दर-सुन्दर पालनाजी बनाए, कि तय करना मुश्किल हो गया, किसको कौनसा स्थान दे। पयुर्षण महापर्व का आगमन हो चुका था, सब लोगों की हर जगह उपस्थिति थी, जिन्होंने कभी अपने जीवन सिर्फ नवकारसी ही की, ऐसे लोगों ने गौतम गणधर तप, छठ, अट्ठम तप और अट्ठाई तप किये। संवत्सरी के दिन बहुत से लोगों ने पौषध लिया। एक नया अनुभव था, सबके लिए, पौषध करना, पडिलेहन करना, सारी क्रिया करना। क्षमापना के प्रोग्राम में सब लोग इतने उत्साहित थे, कोई गीत के द्वारा व्यक्त कर रहे थे, तो कोई शब्दों में व्यक्त कर रहे थे, अति उत्साह और उमंग से पयुर्षण पर्व सम्पन्न हुए।

बैंगलोर में जागरण

पू. आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. संघरत्ना श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की आज्ञांकिता पू. विदुषी साध्वी रत्न श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. पू. सम्यक्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास बैंगलोर नगर के बसवनगुडी श्री विमलनाथ जिन मंदिर एवं दादावाडी परिसर में चल रहा है।

आपके प्रवचनों में गच्छ व संघ में अनूठी जागृति आई है। आपकी प्रेरणा से संगीत मंडल की स्थापना की गई। बालक बालिकाओं के संस्कारों की सुरक्षा हेतु आपका विशेष प्रयत्न प्रारंभ है।

श्री भक्तामर पूजन का आयोजन

परम पूज्या गणाधीशजी श्री मणिप्रभ सागरजी की आज्ञानुवर्तिनी तथा छत्तीसगढ़ रत्नाश्री मनोहर श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की निश्रा में श्री भक्तामर महापूजन का आयोजन दिनांक 28 सितम्बर 2015 से श्री हीरविजयसूरि जैन उपाश्रय में किया जा रहा है। यह महापूजन दिनांक 8 अक्टूबर को पूर्ण होगा। इस महापूजन में अच्छी संख्या में आराधक भाग ले रहे है। महापूजन प्रतिदिन प्रात: 9. बजे से 10.30 बजे तक हो रहा है।

चैन्नई में अष्टापद भाव यात्रा का सफल आयोजन

चैन्नई के सुप्रसिद्ध धर्मनाथ मंदिर में पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. सा. की शिष्या पू. धवलयशस्वी आर्या श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की परम पावन निश्रा में दि. 6 सितंबर को अष्टापद की भाव यात्रा संपन्न हुई।

साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म. ने अष्टापद भाव यात्रा विश्लेषण पूर्वक करवाई। अष्टापद तीर्थ के बारे में सुना था कि आदिनाथ प्रभु का वहाँ पर निर्वाण हुआ हैं लेकिन इस तीर्थ की महिमा क्या है? कहाँ पर है? किसने यह तीर्थ बनाया? ये सभी जानकारी सुन उपस्थित सभी जन अहोभाव से भर गये।

अष्टापद तीर्थ का पट्ट में एक नाग सभी व्यक्तियों को जला रहा है पास में बडी विशाल नदी हैं। एक–एक सीढी पर 501 तापस कायोत्सर्ग में लीन है। रावण–मंदोदरी यहाँ क्यु आए, यह सिंह के आकार वाला सिंह निषद्या नामक चैत्य का क्या महत्व है? इत्यादि एक–एक दृश्य का महत्व भक्तिमय वातावरण में विवेचन किया गया। अन्त में चैत्यवंदन के पश्चात् सभी को संवेदना के द्वारा प्रभु के समक्ष अपने पापों का प्रायश्चित्त करवाया गया, सभी भक्तों की आँखों में से ऑसु बहने लगे। 'जय दादा की, जय दादा की' नारा गुंजने लगा और श्रीसंघ के लोगों का कहना था कि आज तक बहुत बार भाव–यात्रा तो की लेकिन ऐसी भावयात्रा प्रथम बार की। इस अवसर पर तिरूपात्तुर से वर्षीतप के सभी तपस्वी पधारे। उनका बहुमान किया गया।

– गौतम संकलेचा

बाड़मेर से सम्मेतशिखर यात्रा रवाना

बाड़मेर। कुशल दर्शन मित्र मंडल बरमसर ग्रुप द्वारा 10 दिवसीय यात्रा संघ बाड़मेर से सम्मेतसिखर जी यात्रा संघ रवाना हुआ। कुशल दर्शन मित्र मंडल के कपिल मालू ने बताया कि बाड़मेर से सम्मेतसिखरजी रेल यात्रा संघ 30 सितम्बर को रवाना होकर पारसनाथ, कुण्डलपुर, राजगृही, गयाजी, तीर्थ होता हुआ 6 अक्टूबर को सम्मेतसिखर जी पहुँचेगा जहाँ पर 7 अक्टूबर को सम्मेतसिखर जी की 18 कि. मी की ऊँची चढ़ाई करके सभी जैन तीर्थकरो की टुंको के दर्शन करके संघ 10 अक्टूबर को बाड़मेर पहुँचेगा।

हॉस्पेट के बाबूलालजी रेल्वे सदस्य बने

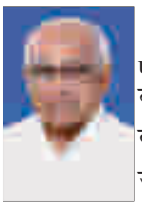

श्री बाबूलाल जी जैन को Zonal- Railway users Consallative Committe S.W.R. Hubli के लिये माननीय रेल मंत्री (भारत सरकार) द्वारा दो साल के लिये मनोनीत किया गया है। बाबूलाल जैन ऐसे सदस्य है जो S.W.R. के गठन से आज तक लगातार इसके सदस्य के रूप में मनोनीत किये गये है। जैन 4 दफा राष्ट्रीय रेल्वे सलाह परिषद् न्यू दिल्ली के लिये भी चुने गये। S.W.R. का गठन 2003 में हुआ मगर बाबूलाल जैन 1992 में प्रथम बार D.R,U.C.C. Hubli Divisin के सदस्य के रूप में मनोनीत हुए थे एवं पश्चात् Gundkal Divisin एवं 2001 में Z.R.U.C.C. S.Cry के लिये Hubli Divisin से चुने गये।

धमतरी में तपस्या का अनूठा ठाठ

धमतरी नगर की पावन धरा पर श्री जैन श्वे. मू. संघ एवं श्री चातुर्मास व्यवस्था समिति के तत्त्वाधान में पूजनीय खरतरगच्छाधिपति गुरूदेव श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्री जी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री शासनप्रभा श्री जी म.सा. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञा श्री जी म.सा. की निश्रा में श्री पर्यूषण महापर्व के अवसर पर तप-जप आराधना-उपासना सह-सानंद सोल्लास संपन्न हुआ। पर्यूषण पर्व के दिनों में आराधना का अनूठा वातावरण बना।

चातुर्मास प्रारंभ के साथ ही तपस्या की श्रृंखला चालु हुई। मासक्षमण, 13-11-9-8 उपवास, चौदह पूर्व तप, अक्षयनिधि, समोवशरण, विजय कषाय, मोक्षतप आदि विविध तपों से जुड़कर भव्यात्माओं ने कर्म निर्जरा का पुरूषार्थ प्रकट किया।

श्री चमरुरामजी ध्रुव ने मासक्षमण जैसी दीर्घ तप किया ते अल्पायु दर्शन लुनिया, सिद्धार्थ पारख ने अट्ठाई तप कर पर्युषण की आराधना की।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष वरघोडे की शान अलग थी। वरघोड़े में परमात्मा का रथ जिसे आज तक बैलों द्वारा खींचा जाता था इस वर्ष उस रथ को श्रावकों द्वारा ही परमात्मा के प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति प्रकट करते हुए रथ खीचा गया। और धमतरी में ही नहीं पूरे छत्तीसगढ में एक नये इतिहास का सर्जन किया गया।

त्रिदिवसीय महापूजन का मंगल आयोजन किया गया। जिसमें श्री पर्श्वनाथ जिनालय, श्री आदिनाथ जिनालय एवं श्री अभिनंदन स्वामी जिनालय में क्रमशः अठारह अभिषेक के मंगल विधान के साथ दोपहर में दादा गुरूदेव महापूजन, श्री गुरू गौतमस्वामी श्री सरस्वती महापूजन एवं श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन का भव्यातिभव्य आयोजन संपन्न हुआ।

महापूजन के विधि-विधान हेतु विधिकारक बैंगलोर से श्री अश्विन भाई गुरूजी एवं उनके सहयोगी श्री उमेश भाई एण्ड पार्टी पधारे। जिन्होंने भक्ति धारा प्रवाहित कर पूजन अनुष्ठान में भक्तों को भक्ति में झूमने हेतु विवश कर दिया। 68 दिवसीय नवकार महामंत्र का जाप चालु है। जिसकी पूर्णाहुति आसोज शुक्ला पूर्णिमा 27/10/2015 को होगी।

-आकाश गोलेछा

धमतरी नगर में विभिन्न तपश्चर्याएं

मासक्षमण

चमरुराम ध्रुव

11 उपवास

जीवनमल बैंगानी

11 उपवास

मोनाजी गोलेछा

9 उपवास

विजय गोलेछा

9 उपवास

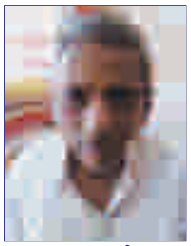
लूणकरण गोलछा

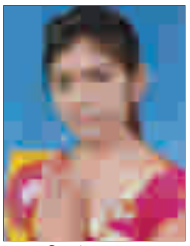
कु. ट्विंकल पारख

अंकिता राखेचा

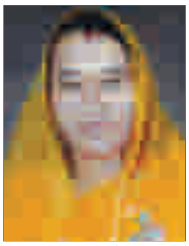
शकुन पींचा

अरुणा पारख

कु. यामिनी खिलोसिया

प्रीती राखेचा

कु. पायल ओस्तवाल

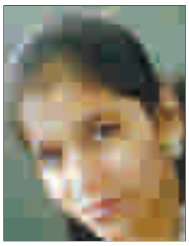
कु. लब्धि वैद

प्रियंका राखेचा

अट्ठाई तप

दर्शन लुणिया

सिद्धार्थ पारख

स्वरुप डागा

महेश सेठिया

दिलीप संचेती

प्रिया लुणिया

भूमि कोचर

सृष्टि कोचर

खुशी संखलेचा

विमला बाई वैद

नौ उपवास के तपस्वी

कविता राखेचा, समकित राखेचा

अट्ठाई तप के तपस्वी

पुलकित डागा, अमित राखेचा, रोहित राखेचा, मुस्कान बरड़िया, प्रियल लूणिया

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 113

परमात्मा महावीर जीवन-कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

हजारों विघ्नों पर विजय प्राप्त कर वे वीतराग बने। शास्त्र-ग्रन्थ उनके गुणों का गान कर रहे हैं, संत-निर्ग्रंथ उनकी गरिमा का व्याख्यान कर रहे हैं, ऐसे महामहिम चौबीसवें तीर्थकर महावीर के 24 गुण प्रस्तुत पहेली में छिपे हैं।

उनमे से उदाहरणार्थ 'निरंजनता' को प्रकट किया गया है। शेष 23 गुणो में से 20 सही होने जरुरी है। इन्हें आप प्रकट करे और रिक्त स्थान में भरे-

व्र	ह	य	र	स	वा	ह	क्ष	मा	न	भ	ए
ध	भ	ह	म	य	ते	ज	स्वि	ता	व्य	ता	का
न	म्र	ता	न	को	म	ल	ता	मृ	स	ची	ग्र
ल	ला	य	आ	द	र	भ	दु	य	र	य	ता
क	खा	र्भ	स	हि	ष्णु	ता	र	ल	ल	ता	ग
अ	नि	नि	द	ल	य	न	त	ना	ता	द्ध	रा
व्य	स्पृ	का	दा	भा	व	ज	व	भ	का	ब	वि
न्या	ह	जी	क	व	ला	रं	र्लो	जी	म	ति	का
वी	ता	मा	वी	ण	द्र	नि	स्सं	ग	ता	प्र	य
श्री	आ	र	ह	बा	रा	दा	स	त्त	ह	अ	र
ता	ता	वा	धी	कु	भ	ली	म	य	व	सौ	ता
न	र	क	ल	त्म	श	प्र	ला	ता	दी	सौ	क
च	भी	ता	भी	ग	अ	म	प	जो	मा	म्य	ख
किं	गं	त	थ	हो	क	ष्कं	स	हि	ष्णु	ता	द
अ	भा	व	न	श	नि	र्लि	प्त	ता	क्ष	य	क

1. ..... 2. ..... 3. ..... 4. .....

5. ..... 6. ..... 7. ..... 8. .....

9. ..... 10. ..... 11. ..... 12. .....

13. ..... 14. ..... 15. ..... 16. .....

17. ..... 18. ..... 19. ..... 20. .....

21. ..... 22. ..... 23. ..... 24. .....

जहाज मन्दिर पहेली का उत्तर पोस्ट कार्ड पर लिखकर भेजे।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा : श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी
एम. जी. रोड़, पो. रायपुर-492001 (छ. ग.)
फोन : 0771-2226085

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 नवम्बर तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल दिसम्बर में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-

शा. सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया (छबड़ा) ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन [ ][ ][ ][ ][ ][ ] जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

जहाज मंदिर पहेली - 111 का सही उत्तर

1. सत्संग	2. लज्लालुता	13. इन्द्रिय विजेता	14. विवेकी
3. उचित व्यय	4. न्याय धन	15. सौम्य	16. अकदाग्रही
5. गुणानुरागी	6. दीर्घदर्शी	17. मातृ पितृ सेवा	18. कृतज्ञ
7. अजीर्ण भोजन त्यागी	8. धर्म श्रवण	19. पर निन्दा त्यागी	20. दयालु
9. पाप भीरू	10. देशज्ञ	21. उचित वेश	22. स्वाध्याय
11. परोपकारी	12. समयज्ञ	23. मृदु	

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- निर्मला पींचा-रायपुर,

छह प्रोत्साहन पुरस्कार- प्रवीण चोपडा-कोट्टूर, चन्द्रसिंह जैन-उदयपुर, विनीता बच्छावत-फलोदी, पुष्पा देवी जैन-जगदलपुर, सीमा जैन-जयपुर, राजेश बेंगानी- भाईंदर,

चार प्रोत्साहन पुरस्कार-

गौतमचंद बैद-कुरींजिपाडी, सीमा भण्डारी-ब्यावर, शोभा जैन-पनरूटी, सरसलता जैन-दिल्ली

इनके उत्तर पत्र सही थे- साध्वी अमीवर्षा श्रीजी-सांचोर, साध्वी तत्त्वदर्शनाश्रीजी-पालीताणा, साध्वी गुणोदयाश्रीजी-मोकलसर, साध्वी सुयशाश्रीजी-मालपुरा

इसके उत्तर पत्र त्रुटिमुक्त थे- मनोहरलाल झाबक-कोटा, कमला भंसाली-जोधपुर, सुन्दरी बाई राखेचा-त्रिची, मनीषा राखेचा-त्रिची, मधुबेन शाह-गदग, मंगल भसाली-शहादा, कनिष्का जैन-पनरूटी, अंजू वैद-जोधपुर, कुशल कोठारी-अनलनेर, कमलेश भण्डारी-जयपुर, नीतु भण्डारी-जयपुर, मदनलाल कोचर-अक्कलकुवा, उषा सोनी-नांदेड, स्वीटी कोचर-शहादा, हर्षित सिसोदिया-रायपूर, पारस कानूगा-टिण्डीवनम्, निर्मला बच्छावत-फलोदी, तारा रूणिवाल-जयपुर, जया देवी जैन-जयपुर, पिंकी धारीवाल-कोट्टूर, संगीता बुरड-ब्यावर,फीणी बेन बाफना-कोट्टूर, तेजस बाफना-कोट्टूर, राजेन्द्र पामेचा--जोधपुर, पुष्पा डोसी-ब्यावर, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, राजेन्द्र सुराणा-जहाजपुर, इंदु सुराणा-जहाजपुर, सुषमा धारीवाल-जयपुर, चंपा नाहटा-हैदराबाद, कंचन डागा-भोपाल, दिव्या बोथरा-इचलकरंजी, राजेश खवाड-मदनगंज, सीमा छाजेड-उज्जैन, रोजश बदलिया-जयपुर, अवधेश शर्मा-मालपुरा, शांता गोलेछा-टिण्डीवनम्, मनीला पारख जयपुर, पिस्ता गोलेच्छा-जयपुर, चेतना बच्छावत-अजमेर, प्रेमदेवी दुगड-जयपुर, महावीर बोथरा-बल्लारी, शकुन्तला कोठारी-तिरूवलामलै, भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, कुशल जैन-अक्कलकुवा, तिलोकचंद श्रीमाल-बिहाडा, भारती गोलेछा-राजनांदगाँव, राजकुमार भण्डारी-बूंदी, श्वेता भंडारी-बूंदी, पवनबेन तातेड-अहमदाबाद, सविता बोथरा-इन्दौर, अनुभा बेंगानी-जयपुर, नरेश सिंघी-मालपुरा, सुशीला डोसी-जोधपुर, नव्या जैन-जयपुर, सुजाता जैन-जयपुर, इषीका जैन-मालपुरा, सुशीला भण्डारी-कोटा, लता भंसाली-जयपुर, संगीता गोलेछा- कोण्डागाँव, सूरज मालू-रायपुर, चन्द्रकांता संचेती-जयपुर, किरण बांठिया-पालीताणा, शांता वैद-जोधपुर, किरण बैद मुथा-रायपुर, रतनलाल भण्डारी-ब्यावर, सविता जैन-मुम्बई, सुशीला लूंकड-तिरूपात्तुर, निहालचंद जैन-तिरूपात्तुर, निर्मला जैन-उदयपुर, नीरज जैन-उदयपुर, नमिता जैन-उदयपुर, मोनिका चतुरमुथा-सारंगखेडा, मदनलाल गांधी-अहमदाबाद, चित्रा झाबक-बडौदा, माना चतुरमुथा-खरियाररोड़, शशि पामेचा-जोधपुर, कुसुम बेंगानी-रायपुर, अनुजा ओस्तवाल-हिंगणघाट, सरला जैन-कडलूर, कोमल गुलेच्छा-फलोदी, मधु जैन- ऊटी, शांतीदेवी गांधी-जोधपुर, एकता गुलेच्छा-तिरूपात्तुर, मनीषा लूणावत-ऊटी, जया

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

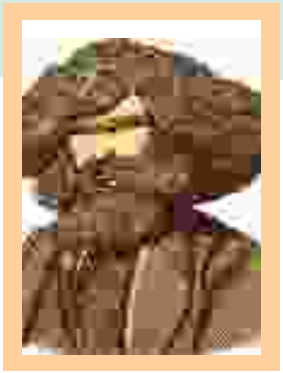

जटाशंकर द्वारा प्रचार करवाया गया था कि उसे एक नौकर की सख्त जरूरत है। दो चार दिनों बाद घटाशंकर उसके पास पहुँचा और कहा- मैं काम करना चाहता हूँ, पर पहले स्पष्ट कर दें कि आप मुझे तनख्वाह क्या देंगे!

जटाशंकर ने कहा- मैं तुम्हें दोनों समय खाना भर पूर दूंगा। पर तनख्वाह बिल्कुल नहीं दूंगा। तुम्हें मेरी यह शर्त मंजूर हो तो बोलो ताकि मैं तुम्हें काम समझा सकूं।

घटाशंकर का मन हुआ कि तुरंत ना बोल दूं। जब पैसा नहीं देगा, तो काम क्यों करूँगा?

पल भर बाद मन में आया- खाना तो भर पेट दे ही रहा है। पिछले कई दिनों से तो मैं यों ही बैठा हूँ। चलो खाना तो मिलेगा। खाने का पैसा तो बचेगा। फिर दूसरा काम तो ढूंढ ही रहा हूँ। कोई अच्छा काम मिल जायेगा, तो इस काम को छोड दूंगा। तब तक थोडा सहारा तो लगेगा।

घटाशंकर ने पूछा- चलो मैं तुम्हारा काम करने के लिये तैयार हूँ। काम बोलो।

जटाशंकर ने कहा- गांव के किनारे एक लंगर चलता है। जहाँ सबको भोजन प्राप्त होता है। वहाँ न पैसा लिया जाता है.. न जात पांत पूछी जाती है। आओ और खाओ। आप किसी भी धर्म के अनुयायी हो... किसी को भी मानने वाले हो...! भोजन सबके लिये खुला है।

बस! इतना ही काम करना है तुम्हें! कि दोनों समय वहाँ जाना है। पहले भर पेट भोजन करना है। फिर मेरे लिये टिफिन में भोजन ले आना है।

सुनते ही घटाशंकर का दिमाग चकरा गया। यह क्या काम है! इसमें तुम्हारा लेना देना क्या है! लंगर में तो मैं स्वयं जा सकता हूँ। इसमें तुम्हारे यहाँ नौकरी की क्या जरूरत है!

टिफिन ढोने जैसा संसार है। हमें मिलता कुछ नहीं। समय पूरा होता है। फिर भी हमारे नेत्र नहीं खुलते। हम ऐसा काम कर रहे हैं, जिसका कोई सार्थक परिणाम नहीं है।

(शेष पृष्ठ 13 का)

जहाज मंदिर पहेली - 111 का सही उत्तर

सावनसुखा-सिवकाशी, सरला गोलेच्छा-लालबर्रा, किरण गोगड-दुर्ग, शकुन्तला कांकरिया-हैदराबाद, सौभागमल कोठारी-ब्यावर, चन्द्रा कोचर-भाइंदर, जयश्री कोठारी-भाइंदर, सोहनबेन झाबक-बडौदा, तारा कोठारी-भाइंदर, प्रियंका संकलेचा-अक्कलकुवा, शांता चोपडा-रतलाम, आदित्य जैन-बामनिया, पलक शाह-मांडवी, ममता चोपडा-पचपदरा, चन्द्रादेवी सेठिया-तलोदा, निर्मला संकलेचा- हैदराबाद, शांतिबाई पारख-धमतरी, मोहिनीदेवी पारख-धमतरी, विमल संकलेचा- हैदराबाद, स्वरूपचंद जैन-जयपुर, स्नेहलता चौरडिया-जयपुर, डॉ सुनीता जैन-जयपुर, मंजू गोलेछा-जयपुर, जेठीबाई कोठारी- फलोदी, गौतमचंद कोठारी-फलोदी, अनिता कोचर-फलोदी, विमल लोढा-जयपुर, सरोज बेंगानी-ब्यावर, पल्लवी बांठिया-जयपुर, मोनिका बेंगानी-ब्यावर, भंवरलाल गुलेचछा-अक्कलकुवा, इंदिरा संकलेचा-हैदराबाद।

पूजा विधि विधान में पूज्यश्री

पूजा विधि विधान में
मुख्यमंत्री बहिन म. अर्हद्दास मण्डल

नगरी मुनि श्री नमसागरजी म.
का भव्य स्वागत

अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद्
रायपुर शाखा की शपथ विधि

पूज्यश्री से आशीर्वाद लेते
परिवहन मंत्री श्री राजेशजी मूणत

पूज्यश्री से आशीर्वाद लेते
कृषि मंत्री श्री बृजमोहनजी अग्रवाल

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO-4625/2015-2017 Date of Posting 7th

श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावन धरा पर

श्री खरतरगच्छ महा सम्मेलन

※ आज्ञा एवं निश्रा ※

पूज्य गुरुदेव गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

साधु – साध्वी सम्मेलन

दि. 1 मार्च से 9 मार्च 2016 तक

श्रावक–श्राविका सम्मेलन

दि. 10 मार्च से 12 मार्च 2016 तक

अनुरोध : इस ऐतिहासिक आयोजन में तन, मन, धन से जुड़कर पूर्ण रूप से सफल बनावें।

※ अर्थ सहयोगी योजना ※

※ रत्न स्तंभ ※	※ स्वर्ण स्तंभ ※	※ रजत स्तंभ ※	※ श्रीसंघ स्तंभ ※
₹. 5 लाख	₹. 2 लाख	₹. 1 लाख	₹. 1 लाख

※ आयोजक ※

श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन आयोजन समिति

श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड, पालीताणा-364270 (गुज.)

E-mail : sammelan2016@gmail.com

※ सम्पर्क सूत्र ※

गौतमचन्द बुच्चा 98410 84136 | केसरमल मुलेचा 94603 07442 | किशनराज बोरी 95437 31006 | विरोकचन्द बरांदिया 9827126101 | पद्मकुमार दाँतेरा 95408 42148 | दीपचंद भाटगरा 9009009265

विशेष : सम्मेलन में विहार हेतु दूसरा आमंत्रित है।

श्री जिनकुशलसूरि स्मारक ट्रस्ट,

[illegible]

www.jahajmandir.com

www.jahajmandir.org